



अंतरिक्ष अरुणोदय

एनईसैक हिन्दी गृह पत्रिका

मई 2023 - अप्रैल 2024 | अंक संख्या -1



निदेशक की प्रस्तावना



यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि एनईसैक अपनी हिंदी गृह पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" के प्रथम अंक का प्रकाशन कर रहा है, जिसे आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जैसा कि आप जानते हैं कि भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग के तत्वाधान में उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक) पूर्वोत्तर क्षेत्र के सतत विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने हेतु समर्पित एक अग्रणी केंद्र है। इसके भू-स्थानिक समाधान, पर्यावरणीय निगरानी, आपदा प्रबंधन सहायता, क्षमता निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग प्रयासों ने क्षेत्र के विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। निरंतर नवाचार और सहयोग पर ध्यान देने के साथ, एनईसैक आगामी वर्षों में पूर्वोत्तर क्षेत्र की अनूठी आवश्यकताओं को पूरा करने में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। एनईसैक, संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग के लिए निरंतर प्रयासरत है।

एनईसैक द्वारा हिंदी पत्रिका के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। जैसा की सर्वविदित है, भाषा व्यक्ति की अभिव्यक्ति संप्रेषित करने का सशक्त माध्यम होती है। भारत एक बहुभाषिक तथा विविध संस्कृति वाला देश है। हिंदी भारत वर्ष की वैभवशाली संस्कृति की वाहक है तथा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो संपूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोने में सहयोग कर रही है। अंतरिक्ष अरुणोदय पत्रिका न केवल हमारी भाषा का संरक्षण करेगी, बल्कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग, हिंदी साहित्य, सामाजिक ज्ञान एवं विचारधारा को भी अग्रसारित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्रिका के संपादन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयता प्रदान कर रहे सभी एनईसैक कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की सराहना करता हूँ। एनईसैक ने गृह पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" के माध्यम से हमारे वैज्ञानिक/अभियंताओं, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को ज्ञान और अनुभव साझा करने का एक अवसर प्रदान किया है। पत्रिका के माध्यम से अंतरिक्ष और उससे जुड़ी प्रौद्योगिकी, विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हमारे उत्कृष्ट कार्यों, विभिन्न विषयों पर रचनाओं के साथ-साथ केंद्र की विभिन्न गतिविधियों को भी प्रस्तुत किया गया है।

गृह पत्रिका अंतरिक्ष अरुणोदय के प्रथम अंक के प्रकाशन द्वारा गृह पत्रिका समिति, एनईसैक राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में अत्यन्त सराहनीय प्रयास कर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि "अंतरिक्ष अरुणोदय" एनईसैक परिवार के सदस्यों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति हेतु एक उपयुक्त साधन सिद्ध होगा।

मैं गृह पत्रिका समिति एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि सदस्य भविष्य में और भी ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक संस्करण लाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

डॉ. एस.पी. अग्रवाल

गृह पत्रिका समिति के अध्यक्ष का संदेश



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक) की हिंदी गृह पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" के प्रथम अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। जैसा की हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हमारा देश बहुभाषी देश है। कोई भी भाषा न केवल संपर्क का साधन मात्र होती है अपितु उस क्षेत्र की संस्कृति को जानने एवं समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी होती है।

पत्रिका में संकलित लेखों के माध्यम से मुझे यह अनुभव हुआ है कि एनईसैक में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों में प्रभावशाली लेखन प्रतिभा विद्यमान है तथा ऐसा प्रतीत होता है कि केंद्र में हिंदी भाषा के उपयोग के प्रति

जागरूकता उत्पन्न हो रही है। यह इंगित करता है कि संस्थान के अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कामकाज में राजभाषा का उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं, जो राजभाषा निति के अनुपालन में संस्थान को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य करते हुए आम जनता को राजभाषा हिंदी के माध्यम से केंद्र की गतिविधियों और कार्यकलापों से अवगत कराने हेतु निरंतर गृह पत्रिका प्रकाशन की यह श्रृंखला निश्चित रूप से फलदायक होगी।

पत्रिका के इस सामूहिक प्रयास में अपनी रचनाओं का योगदान देने के लिए मैं सभी रचनाकारों, गृह पत्रिका समिति एवं केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

(डॉ. बी. के. हैडिक)
प्रमुख, कार्यक्रम नियोजन
एवं मूल्यांकन समूह

प्रशासन नियंत्रक का संदेश



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक) की हिंदी गृह पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" के प्रथम अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु राजभाषा हिंदी का प्रसार और प्रगामी प्रयोग हमारा दायित्व है। इस दिशा में एनईसैक, संघ की राजभाषा नीति और राजभाषा संबंधी संवैधानिक नियमों को सक्रिय रूप से लागू करने के प्रति सदैव अग्रसर रही है। हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से राजभाषा की प्रगामी प्रगति में सहायता मिल रही है।

एनईसैक की राजभाषा के प्रति निष्ठा, कड़ी मेहनत और लगन का ही परिणाम है कि विगत कई वर्षों से हमारे कार्यालय को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों की प्राप्ति होती रही है। इस वर्ष भी वर्ष 2022-2023 के लिए हमारे कार्यालय को तृतीय पुरस्कार की प्राप्ति हुई है। साथ ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग द्वारा एनईसैक को वर्ष 2021-2022 हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह एक ओर जहां हमारे मनोबल को बढ़ाता है तथा हमें प्रोत्साहित करता है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा के प्रति हमारी जिम्मेदारी एवं प्रतिबद्धता को और अधिक मज़बूत करती है।

इसी कड़ी में, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और केंद्र में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों में हिंदी भाषा को और अधिक प्रबल करते हुए और दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एनईसैक की गृह पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" एक महत्वपूर्ण स्तंभ सिद्ध होगा। साथ ही साथ एनईसैक के सभी कार्यरत कर्मचारियों को कहानी, कविता, रचनात्मक लेख, चित्रकारी आदि के माध्यम से अपनी प्रतिभा अभिव्यक्त करने और विचारों का आदान प्रदान करने का सुअवसर भी प्राप्त होगा। पत्रिका के संपादक मंडल सदस्यों, लेखकों को मेरी ओर से इसके सफल प्रकाशन की कामना सहित हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

(शारिक आलम)
प्रशासन नियंत्रक

संपादक की कलम से



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनएसईक) ने न केवल इस क्षेत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों में अग्रणी भूमिका निभाई है, बल्कि सरकार की राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन में भी हमेशा सक्रिय रहा है। इसने एनईसैक कार्यालय के भीतर और बाहर की गतिविधियों की स्वीकृति के रूप में नियमित रूप से कई पुरस्कार जीते हैं। एनईसैक की गृहपत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" का प्रथम संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है जो मेरे लिये बहुत ही हर्ष का विषय है। गृहपत्रिका एनईसैक के युवा कर्मचारियों की रचनात्मक और गतिशील मानसिकता को दर्शाती है जो न केवल तकनीकी-प्रेमी हैं बल्कि प्रकृति के भी करीब हैं।

केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.पी. अग्रवाल की सतत प्रेरणा एवं नेतृत्व में राजभाषा कार्यान्वयन को नई गति मिली है। न केवल लोग हिंदी में अधिक से अधिक सरकारी कामकाज करने के लिए आगे आ रहे हैं, बल्कि विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं में भागीदारी में भी काफी वृद्धि देखी गई है। मैं निश्चित रूप से इये यह सकता हूँ कि द्विवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका "अंतरिक्ष अरुणोदय" के पहले अंक के प्रकाशन के पीछे निदेशक महोदय ही मुख्य संचालक शक्ति रहे हैं। बिजय के. हैंडिक, प्रमुख, पी.पी.ई.जी. की अध्यक्षता में संपूर्ण गृह-पत्रिका समिति ने इस अंक को सामने लाने में निरंतर काम किया है।

केंद्र के कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों ने इस माध्यम के द्वारा अपनी प्रतिभा उजागर किया है। मैं पत्रिका हेतु लेख प्रदान करने के लिए सभी लेखकों का आंतरिक रूप से धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ। पत्रिका में विभिन्न विषयों पर रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं जो इसे और भी रोचक बनाता है। साथ ही केंद्र की विभिन्न गतिविधियों को भी पाठकों के सामने रखा गया है। इसके माध्यम से, एनईसैक परिवार को उनके मनोरंजन के लिए एक मानक पत्रिका प्रदान की गई है।

सभी पाठकों से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वे पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार के लिए उनके सुझाव प्रदान करें। मैं एनईसैक परिवार के सभी सदस्यों से पत्रिका के भविष्य के अंकों में सक्रिय रूप से भाग लेने का भी अनुरोध करता हूँ।

(अंजन देबनाथ)
संपादक, एनईएसएसी हिंदी गृह-पत्रिका

अनुक्रमणिका



विषय	पृष्ठ संख्या
हमारे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए उपग्रह संचार का अनुप्रयोग - रमनी कुमार दास	9
इसरो का लचीलापन : चंद्रयान 3 की जीत की यात्रा - डॉ. प्रदेश जेना	10-12
जल संसाधनों के विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग - डॉ. दिगंत बर्मन	13-14
सतर्क भारत: समृद्ध भारत की कल्पना - डॉ. रॉशी युमनाम	15-17
चैटजीपीटी (ChatGPT) के साथ बातचीत - विपिन कुमार राय	18-19
लाश कहा गई? - अंजन देबनाथ	20 -22
बैम्बो ट्रैकिंग (मावरिगखांग ट्रेक) मेघालय में साहसिक अभियान - दारजी हरीश कुमार	23-24
एक आश्चर्य की मीनार: फ्लोरेंस से पीसा की झुकी मीनार तक एक दिन की यात्रा - डॉ चंदन गोस्वामी	25-26
आदतें - डॉ.रेखा बी.गोगोई	27
ज़िन्दगी - डॉ. अभय श्रीवास्तव	28
बस नारी रहने दो हमको - नमिता रानी मित्रा	29
महत्वपूर्ण झलकियाँ	30-57
एनईसैक परिवार के नये सदस्य	58

हमारे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए उपग्रह संचार का अनुप्रयोग



रमनी कुमार दास
प्रमुख, एसयूडी/सीएमडी



भारत का उत्तर पूर्वी क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों का एक अनाविष्कृत भंडार है। इसका प्राकृतिक सौन्दर्य और मनोरम जलवायु विश्व भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश के गगनचुम्बी पर्वत, नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर और त्रिपुरा के पाहाड़, मेघालय के पठार और असम के समतल- सभी तरह के भू-आकृतियाँ यहाँ पायी जाती हैं। इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में जल संसाधन (सारे देश का लगभग 30%) है। पूर्वोत्तर भारत के किसी भी हिस्से में प्रति वर्ष 1,000 मिमी से कम वर्षा नहीं होती है। भारी वर्षा ने समृद्ध वन क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त किया है जिसमें पक्षियों और जानवरों की एक भारी संख्या को आश्रय मिला है। इस क्षेत्र में 17 राष्ट्रीय उद्यान हैं जो औषधीय पौधों और कई अन्य दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों से समृद्ध हैं। भारत की नौ महत्वपूर्ण वनस्पति प्रजातियों में से छह पूर्वोत्तर क्षेत्र में पाई जाती हैं। पौधों और जीवों की विविधता इसे विश्व के द्वितीय वृहत्तम जैव विविधता हॉटस्पॉट बनाता है।

यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक बल्कि सांस्कृतिक विभिन्नता के लिये भी जाना जाता है। पूर्वोत्तर भारत में 220 से अधिक जातीय समूह और इतनी ही बोलियाँ हैं। मणिपुरी रास लीला नृत्य और असमिया सत्रिया को "भारत के शास्त्रीय नृत्य" की विशिष्ट श्रेणी में शामिल किया गया है। इनके अलावा, पूर्वोत्तर भारत की सभी जनजातियों के अपने धर्म और त्योहारों से जुड़े अपने लोक नृत्य हैं। शिकार, खेती और स्वदेशी शिल्प के अभ्यास इस क्षेत्र की आदिवासी संस्कृति हैं।

यह क्षेत्र भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त रहता है। पूरा क्षेत्र दुर्गम भूभाग वाला है और भूकंपीय जोखिम क्षेत्र-5 के अंतर्गत है। भारतीय क्षेत्र के कुछ सबसे बड़े भूकंप इसी क्षेत्र में घटे हैं। इनके चलते क्षेत्र के बुनियादी ढांचे का विकास बाधित हुआ है, जिससे आर्थिक पिछड़ापन पैदा हुआ है। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले दो क्षेत्र शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा हैं।

इस मुद्दे को हल करने के लिए एनईसैक ने इसरो के मदद से इस क्षेत्र के सभी राज्यों में टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन परियोजनाओं का विस्तार किया है। टेली-एजुकेशन कार्यक्रम के तहत पूरे क्षेत्र में 7 हब और 330 एस.आई.टी.(SIT) स्थापित किए गए हैं जो उपग्रह संचार की मदद से वर्चुअल कक्षा आधारित शिक्षा उपलब्ध कराती हैं। इससे क्षेत्र के दूरदराज इलाकों के लगभग एक लाख स्कूली छात्रों को मदद मिली है। टेली-मेडिसिन कार्यक्रम के तहत 30 अस्पतालों को उपग्रह संचार के माध्यम से जोड़ा गया है, जहाँ मरीज बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं।

इन सेवाओं को 2009 से उपलब्ध कराया जा रहा है और इससे क्षेत्र के छात्रों और रोगियों को बहुत लाभ हुआ है। उपग्रह संचार प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित नहीं होता है और इसलिए यह क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। हाई थ्रूपुट सैटेलाइट(HTS) की नई पीढ़ी के साथ, इन सेवाओं को सैटेलाइट आधारित इंटरनेट कनेक्टिविटी में स्थानांतरित किया जा सकता है ताकि और भी अधिक स्कूलों और अस्पतालों को जोड़ा जा सके।

इसरो का लचीलापन : चंद्रयान 3 की जीत की यात्रा



डॉ. प्रदेश जेना

वैज्ञानिक/अभियंता -एस.डी, एनईसैक



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 1969 में अपनी शुरुआत से लेकर दुनिया की प्रमुख अंतरिक्ष संस्थायों में से एक बनने तक अंतरिक्ष अन्वेषण के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी है। भारत के बेंगलुरु में स्थित इसरो ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, उपग्रह विकास, अंतरग्रहीय मिशन और वैज्ञानिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इन में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय का ध्यान खींचने वाले इसके महत्वाकांक्षी चंद्र मिशन भी शामिल हैं। इन चंद्र मिशनों ने अमूल्य वैज्ञानिक ज्ञान दिया है। यह लेख चंद्रयान 3 की शानदार जीत की वैज्ञानिक यात्रा और भारत के चंद्र अन्वेषण कार्य क्रम के आशाजनक भविष्य पर प्रकाश डालता है।

चंद्रयान 3: भारत का एक अचंभाविकास

इसरो ने चंद्रयान 3 मिशन नवीन उद्देश्यों को साकार करने के लिए विशेष रूप से तैयार किया है। 14 जुलाई 2023 को लॉन्च किये गये चंद्रयान 3 ने कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करते हुए चंद्रसतह पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग हासिल की है।

चंद्रयान 3 में तकनीकी प्रगति

उन्नत मार्गदर्शन तकनीक: चंद्रयान 3 अत्याधुनिक मार्गदर्शन प्रणालियों को एकीकृत करता है। इन अत्याधुनिक इन तकनीकों के कारण मिशन के दौरान अंतरिक्ष यान का सटीक स्थिति और डेटा प्राप्त किया जा सकता है, जिससे अंतरिक्ष यान का जोखिम कम हो जाता है।

निर्बाध संचार: निर्बाध संचार सुनिश्चित करने के लिए, चंद्रयान 3 उन्नत संचार प्रणालियों का उपयोग करता है। मिशन के महत्वपूर्ण चरणों के दौरान संचार और टेलीमेट्री प्रणालियों को निर्बाध रूप से एकीकृत किया गया है।

मजबूत डिजाइन: चंद्रयान 3 में मजबूत लैंडर डिजाइन किया गया है। इसकी वजह लैंडिंग के दौरान लैंडर की स्थिरता की गारंटी देना और सुरक्षित चंद्रलैंडिंग सुनिश्चित करना है।

चंद्रयान 3 के लक्ष्य

चंद्रयान 3 पर लगे उपकरण चंद्रमा की संरचना, भूविज्ञान और पर्यावरण के बारे में हमारी समझ को गहरा करने की कोशिश करता है।

चंद्रभूविज्ञान: चंद्रयान 3 चंद्रभूविज्ञान का व्यापक अध्ययन करेगा, जिसमें सतह स्थलाकृति, खनिज संरचना और भूवैज्ञानिक इतिहास की विस्तृत जांच शामिल है। ये जांच चंद्रमा की उत्पत्ति और विकासवादी प्रक्रियाओं को उजागर करने की चाबी रखती हैं।

भूकंपविज्ञान: चंद्रयान 3 मिशन चंद्रमा के भूकंपों की निगरानी के लिए भूकंपमापी यंत्रों को तैनात किया है, जो चंद्रमा की आंतरिक संरचना और भूकंपीय गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान करेगा। इस तरह का डेटा ग्रहीय भूभौतिकी की हमारी समझ में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

पानी का पता लगाना: चंद्रयान 3 चंद्र ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ में जमा पानी के वितरण को मैप करने के लिए उन्नत उपकरणों का उपयोग करेगा। यह जानकारी संभावित चंद्र उपनिवेशीकरण के लिए गहरा महत्व रखती है।

चंद्रमौसम: चंद्रयान 3 का उद्देश्य चंद्र के वायुमंडल का विश्लेषण करना है, जो सुरज से आनेवाली हवाओं (सोलर उईंड) और ब्रह्मांडीय किरणों (कोसमिक रेज) के साथ चंद्रमा के वायुमंडल की पारस्परिक क्रिया की गहरी समझ की सुविधा प्रदान करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

इसरो के चंद्रमिशन कभी भी अकेला प्रयास नहीं रहा है। भारत ने दुनिया भर में अंतरिक्ष एजेंसियों और अनुसंधान संस्थानों के साथ सक्रिय रूप से अंतरराष्ट्रीय सहयोग की मांग की है और उसे बढ़ावा दिया है। इन सहयोगों ने वैज्ञानिक विशेषज्ञता, डेटा और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, जिससे चंद्र अन्वेषण के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित और भरोसेमंद भागीदार के रूप में भारत की स्थिति मजबूत हुई है। यूरोपीय स्पेस एजेंसी (ई.एस.ए.) द्वारा संचालित यूरोपीय स्पेस ट्रेकिंग नेटवर्क (एस्ट्रैक), और नासा के जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी (जे.पी.एल.) द्वारा संचालित डीप स्पेस नेटवर्क चंद्रयान -3 मिशन को तकनीकी सहयोग दे रहा है।

निष्कर्ष

चंद्रयान 3 की जीत का सफर इसरो की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता को दर्शाता है। जैसे जैसे भारत अपने अगले चंद्र अभियान की ओर बढ़ रहा है, दुनिया चंद्रमा के बारे में ज्ञान का और विस्तार की प्रतीक्षा कर रही है। चंद्रयान 3 भारत के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम के विकास का प्रतीक है, जो भविष्य के वैज्ञानिक रहस्योद्घाटन और चंद्रमा पर उपनिवेशीकरण के प्रयासों की नींव रखता है।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति की सरलतम स्रोत है।"

सुमित्रा नंदन पंत

जल संसाधनों के विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग



डॉ. दिगंत बर्मन
प्रमुख, जल संसाधन प्रभाग



अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कई प्रकार के अनुप्रयोग प्रदान करती है जो जल संसाधनों के विकास और प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। यह अनुप्रयोग जल संसाधनों के विभिन्न पहलुओं की निगरानी, विश्लेषण और योजना बनाने के लिए उपग्रह डेटा, सुदूर संवेदन और संचार प्रणालियों का लाभ उठाते हैं। यहां जल संसाधन विकास के लिए कई प्रमुख अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग हैं:

जल निकाय मानचित्रण के लिए सुदूर संवेदन:

रिमोट सेंसिंग उपकरणों से सुसज्जित उपग्रह उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजरी को कैप्चर कर सकते हैं, नदियों, झीलों और जलाशयों जैसे जल निकायों की मैपिंग और निगरानी की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। समय के साथ जल निकायों की सीमा, स्वास्थ्य और परिवर्तन का आकलन करने के लिए यह जानकारी महत्वपूर्ण है।

वर्षा की निगरानी और पूर्वानुमान:

अंतरिक्ष आधारित प्लेटफार्म वैश्विक स्तर पर वर्षा के पैटर्न की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती हैं। यह डेटा वर्षा वितरण को समझने और भविष्य में वर्षा की घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए आवश्यक है। सटीक वर्षापूर्वानुमान बेहतर जल संसाधन योजना और प्रबंधन में योगदान करते हैं।

बाढ़ निगरानी और पूर्व चेतावनी प्रणाली:

उपग्रह जल स्तर में परिवर्तन का पता लगा सकते हैं

और बाढ़ संभावित क्षेत्रों की निगरानी कर सकते हैं। यह जानकारी प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे अधिकारियों को बाढ़ के प्रभाव को कम करने के लिए समय पर कार्रवाई करने की अनुमति मिलती है। बाढ़ के मैदानों का मानचित्रण और निगरानी संभावित जोखिमों का आकलन करने और प्रभावी प्रतिक्रिया रणनीतियों को विकसित करने में मदद करती है।

मिट्टी की नमी और सूखे की निगरानी:

स्पेसबोर्न सेंसर, जैसे सिंथेटिक एपर्चर रडार (एस. ए. आर.), मिट्टी में नमी की मात्रा के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, जो सूखे की स्थिति की निगरानी करने में मदद मिलती है। सूखे का शीघ्र पता लगने से जलप्रबंधन रणनीतियों और संसाधन आवंटन में सहायता मिल सकती है।

भूजल अन्वेषण एवं प्रबंधन:

भूजल क्षमता का आकलन करने और भूजलस्तर में बदलाव की निगरानी के लिए उपग्रह-आधारित प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा सकता है। यह जानकारी स्थायी भूजल प्रबंधन में सहायता करती है, जिससे निष्कर्षण और पुनः पूर्ति के बीच संतुलन सुनिश्चित करती है।

जल संसाधन योजना के लिए जलवायु मॉडलिंग:

उपग्रह डेटा जलवायु मॉडलिंग में योगदान करते हैं, जिससे शोधकर्ताओं और नीतिनिर्माताओं को दीर्घकालिक जलवायु प्रवृत्तियों और जल संसाधनों पर उनके प्रभाव को समझने में

मदद मिलती है। जलवायु मॉडलिंग जल संसाधन योजना के लिए अनुकूल रणनीतियों के विकास का समर्थन करता है।

सिंचाई प्रबंधन और फसल निगरानी:

रिमोट सेंसिंग कृषि क्षेत्रों की निगरानी करने, फसल स्वास्थ्य, जल उपयोग दक्षता और सिंचाई आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्रदान करने की अनुमति देता है। खेती में पानी के उपयोग को अनुकूलित करते हुए, उपग्रह से प्राप्त जानकारी के आधार पर सटीक कृषिपद्धतियों को लागू किया जा सकता है।

जल विज्ञान मॉडलिंग और जलविभाजन प्रबंधन:

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जलविज्ञान मॉडलिंग का समर्थन करती है, जिससे जलक्षेत्रों में जलप्रवाह, अपवाह और तलछट परिवहन का अनुकरण करने में मदद मिलती है। यह जानकारी प्रभावी जलविभाजन प्रबंधन और जलसंसाधनों के सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

जलगुणवत्ता निगरानी:

सेंसर से लैस उपग्रह पानी की गुणवत्ता मानकों, जैसे गंदगी और प्रदूषक स्तर में बदलाव का पता लगा सकते हैं। जल की गुणवत्ता की निरंतर निगरानी से प्रदूषण स्रोतों

की पहचान करने और जलसंसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

अवसंरचना योजना और निगरानी:

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी बांधों, जलाशयों और पाइपलाइनों सहित जल अवसंरचना परियोजनाओं की योजना और निगरानी में सहायता करती है। नियमित निगरानी पानी से संबंधित अवसंरचना के कुशल संचालन और रखरखाव को सुनिश्चित करती है।

डेटा प्रसार के लिए संचार प्रणाली:

अंतरिक्ष-आधारित संचार प्रणालियाँ जलसंसाधनों से संबंधित डेटा के कुशल प्रसार की सुविधा प्रदान करती हैं। आपातस्थिति के दौरान प्रतिक्रिया प्रयासों के समन्वय और जल-संबंधित परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए वास्तविक समय संचार महत्वपूर्ण है।

जल संसाधन विकास योजनाओं में इन अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों को एकीकृत करने से जल प्रबंधन प्रथाओं की समग्र दक्षता, स्थिरता और लचीलापन बढ़ जाता है। ये प्रौद्योगिकियाँ सूचित निर्णय लेने, पूर्व चेतावनी प्रणालियों का समर्थन करने और जल संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग और संरक्षण में योगदान देने में सक्षम बनाती हैं।



एनईसैक स्थापना दिवस, 2023- फोटोग्राफी प्रतियोगिता में सुश्री क्षेमी शबोंग, पीएसएस, तृतीय पुरस्कार विजेता।

सतर्क भारत: समृद्ध भारत की कल्पना



डॉ. रोजी युमनाम,
सहायक प्रोफेसर,
पत्नी श्री विक्टर साईखोम,
वैज्ञानिक / अभियंता एसएफ



सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ावा देना भारत को विकास और स्थिरता की नई ऊंचाइयों तक ले जाने की एक प्रासंगिक आवश्यकता बन गई है। आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, चिकित्सा आदि हर क्षेत्र में विकास और निरंतर वृद्धि प्राप्त करने के महान मिशन को प्राप्त करने हेतु भारत में हर साल सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। सतर्कता शब्द, जैसा कि नाम का अर्थ है, एक गौरवशाली भारत की एक निश्चित उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक की सहज सतर्कता, तैयारी और जागरूकता को सामने लाता है। भारत में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का पालन हममें से प्रत्येक को एक पथप्रदर्शक बनने और निष्ठापूर्वक से हर क्षेत्र में निरंतर विकास और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने हेतु एक आंदोलन का हिस्सा बनने की याद दिलाता है। इस बहुत ही महत्वपूर्ण सप्ताह का समारोह भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन के साथ मेल खाता है, जो उच्च अखंडता और सम्मान के प्रतीक रहे हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, मर्यादा और सच्चाई ऐसे गुण हैं जो हमारे महान नेता, सरदार वल्लभभाई पटेल को गौरवान्वित करते हैं। उनके आदर्शों, आकांक्षाओं को याद करने तथा एक ईमानदार और मूल्य संचालित उत्कृष्टता के निरंतर लक्ष्य के लिए प्रयास करने हेतु एक नए उत्साह के साथ एक नए भारत की शुरुआत के रूप में माना जाता है।

विषय, 'सतर्क भारत, समृद्ध भारत' अखंडता, सच्चाई, ईमानदारी और जागरूकता की सहज गुणवत्ता को सुशोभित

करके एक आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत प्राप्त करने की जमीनी वास्तविकता को प्रतिध्वनित करता है। प्रत्येक व्यक्ति की एकमात्र जिम्मेदारी यह देखना है कि कोई कैसे 'सतर्क' होने की स्थिति को प्राप्त कर सकता है और बढ़ा सकता है। भारत संस्कृति, परंपराओं, इतिहास और वैज्ञानिक उन्नति की समृद्ध विविधता वाला एक विशाल देश है। इस विशाल देश का विकास प्रत्येक नागरिक के कंधे पर है। भ्रष्टाचार वह मुख्य बाधा है जो किसी देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक पहलू के विकास को रोकता है। भ्रष्टाचार, एक वैश्विक घटना विकास के हर क्षेत्र को प्रभावित करने वाले व्याधिग्रस्त समाज का कारण है। इसलिए, सतत विकास के वांछित लक्ष्य और उत्कृष्टता को प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक डोमेन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार को समाप्त करने की सख्त आवश्यकता है। इस महान लक्ष्य को हासिल करने के लिए हर संभव तरीके से जनता को प्रेरित और संवेदनशील बनाने की ज़रूरत है। वर्ष 2020 कोविड-19 से भरा रहा; इस कठिन परिस्थिति में भारत हर पल साहस के साथ जूझता रहा और विजयी होने के लिए उत्साह के साथ काम करता है। देश में हर संगठन अपने तरीके से इस अभूतपूर्व महामारी के खिलाफ इस चुनौतीपूर्ण लड़ाई में योगदान दे रहा है जिसने पूरी तरह से कहर बरपाया है। ऐसी कठिन परिस्थिति में, सतर्क रहने का आंतरिक गुण इस तुफान का सफलतापूर्वक मुकाबला करने और उल्लास पूर्वक विजयी होने की कुंजी है। महामारी से सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन का हर क्षेत्र गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस महामारी का मुकाबला करने के लिए हर कदम पर सतर्क रहकर इस विकट

स्थिति को संभालना होगा। यह कोरोनावायरस से होने वाली मौतों के बारे में और समय-समय पर सरकार द्वारा अनिवार्य किए जा रहे प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन करके हासिल किया जा सकता है। सरकार द्वारा कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए जो योजनाएँ तैयार की गई हैं, उन्हें समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध और पहुँच योग्य बनाया जाना चाहिए। वर्तमान महामारी की स्थिति से संबंधित 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का मुख्य उद्देश्य इस घातक महामारी पर काबू पाने की दिशा में जारी लड़ाई के प्रति सतर्कता या जागरूकता पैदा करना होना चाहिए। इस महामारी के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, देश की आर्थिक स्थिरता गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। इस संबंध में, सतर्क रहने की गुणवत्ता की प्रतिध्वनि स्थायी आर्थिक स्थिरता और विकास को प्राप्त करने का अग्रदूत है। सतर्क रहने से, स्थानीय उत्पादकता के लिए जागरूकता, सतर्कता और तैयारी की जा सकती है और इसके निरंतर निर्वाह के लिए काम किया जा सकता है। एक स्थानीय स्थिरता एक शांतिपूर्ण और संतुष्ट जीवन जीने के लिए एक समुदाय की दीर्घकालिक स्थिरता को रेखांकित करती है। बेहतर कल बनाने के लिए सरकार स्थानीय उत्पादों का समर्थन करने में मुखर रही है। यह स्थानीय उत्पादों के वैश्विकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधों को मजबूत करने का एक प्रयास है, जो अंततः एक समृद्ध और संतुष्ट भारत के उद्देश्य को साकार करेगा। एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में, स्थानीय वस्तुओं के स्थायित्व कारक के लाभों को देखने का प्रयास करना चाहिए और अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए काम करने की जागरूकता पैदा करनी चाहिए। स्थानीय होना ना केवल हमारी अर्थव्यवस्था की स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक प्रमुख आवश्यकता है, बल्कि देश के प्रत्येक समुदाय की स्थानीय और स्वदेशी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने का निरंतर प्रयास भी हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने की सख्त आवश्यकता है। देश के मैदानों, पहाड़ियों और परिदृश्य के समान यह अपने आप में परंपराओं और रीतिरिवाजों का एक दिलचस्प क्षेत्र है, एक उभरते हुए समाज के रूप में इसके लोगों और संस्कृति को व्यापक दृष्टिकोण में बढ़ावा देने की आवश्यकता है। संस्कृति एक समाज में लोगों के समूह के प्रेषित और साझा किए गए मूल्यों, परंपराओं, विश्वास, व्यवहारों और विचारों को समाहित करती है। मनुष्य का अस्तित्व संस्कृति में प्रकट होता है इसलिए संस्कृति लेखन परंपरा, इतिहास और साहित्य में एक अनिवार्य भूमिका निभाती है। स्थानीय त्योहारों, रीति-रिवाजों, परंपराओं और ऐतिहासिक अभिव्यक्तियों की याद दिलाने वाली हमारी अंतर्निहित,

जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं की ओर उन्मुख होकर, कोई भी राष्ट्र के समग्र विकास और समृद्धि का लक्ष्य रख सकता है। संस्कृति फिर से मूल्यों से जटिल रूप से जुड़ी हुई है। मूल्यों को बहुआयामी और अमूर्त के रूप में वर्णित किया जाता है जो एक समाज में व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए अंतर्निहित आदर्श बनाता है। शिक्षा की एक प्रक्रिया के रूप में मूल्य शिक्षा का अर्थ शिक्षार्थियों को कुछ करने, महसूस करने, सोचने, प्रतिबिंबित करने, अनुभव करने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करना हो सकता है। इसलिए, किसी व्यक्ति में अमूल्य नैतिक मूल्यों को विकसित करना भी एक सतर्क व्यक्ति होने की प्रासंगिक आवश्यकता है। 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का महत्वपूर्ण उद्देश्य एक भ्रष्टमुक्त समाज के प्रति जागरूकता पैदा करने में सक्षम होना है। यह तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कोई व्यक्ति जीवन की किसी भी परिस्थिति और बाधाओं का सामना करने में सक्षम मूल्यों से युक्त हो। मूल्य विवेकपूर्ण आलोचनात्मक सोच विकसित करने, तर्कसंगत सोच को प्रोत्साहित करने, कल्पना के क्षितिज का विस्तार करने, सही रास्ते पर चलने के संकल्प का अभ्यास करने और व्यक्ति के व्यक्तित्व को समग्र रूप से विकसित करने में सहायता करते हैं जिससे वे अपने जीवन में सही निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। निर्विवाद रूप से, एक सतर्क भारत एक मूल्य संचालित व्यक्ति की याद दिलाता है जो अंततः एक समृद्ध राष्ट्र का नेतृत्व करेगा। इसके विपरीत, देश की राजनीतिक स्थिरता को भी व्यक्तियों को आधारभूत नैतिक मूल्यों के साथ उन्मुख करके स्वचालित रूप से मजबूत किया जा सकता है। एक लोकतांत्रिक देश के रूप में, प्रत्येक व्यक्ति को अपने मताधिकार का प्रयोग करने का अधिकार है। निस्संदेह, यहाँ व्यक्ति को सतर्क रहना होगा और गंभीरता से अपना चुनाव करना होगा। संबंधित रूप से निर्वाचित प्रतिनिधि को उनके कंधों पर बड़ी ज़िम्मेदारी के लिए समान रूप से जवाबदेही होना होगा और पूरे राष्ट्र की उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में काम करने का प्रयास करना होगा। इस संबंध में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन हममें से प्रत्येक को एक समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र प्राप्त करने के लिए उत्कृष्टता हेतु प्रयास करते रहने की निरंतर याद दिलाता है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए, एक सतर्क भारत को महिलाओं को समान रूप से विकास के पहियों को साझा करने और देश को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। एक सतर्क भारत का उद्देश्य जीवन के हर क्षेत्र में वैज्ञानिक सोच की भावना पैदा करना होना चाहिए, जो भारत को एक आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र बनाने की कुंजी है। इसेक विपरीत, देश को

आगे बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया घटना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए, यहां नागरिक की ज़िम्मेदारी आती है कि वह जागरूक रहे और सोशल मीडिया के लाभ और नुकसान के प्रति सतर्क रहे।

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के पालन के महत्व पर पिछले विचार-विमर्श से, यह संकेत दिया जा सकता है कि मौजूदा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक वातावरण के बारे में जागरूकता पैदा करके और नैतिक रूप से सही काम करके एक जागरूक और सतर्क भारत प्राप्त किया जा सकता है। संक्षेप में किसी व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का समग्र विकास एक समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत के लिए भ्रष्ट मुक्त सामाजिक वातावरण प्राप्त करने की पूर्व शर्त है। अत्यधिक प्रासंगिक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' हममें से प्रत्येक को अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहने और एक संतुलित तथा एक संरचित समाज का गौरव प्राप्त करने के प्रयास में अपनी जिम्मेदारी निभाने की निरंतर याद दिलाता है। यह तभी संभव है जब हम काम करने, प्रयास करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लक्ष्य के लिए मानवता की भावना के साथ नैतिक रूप से मज़बूत हों। 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का अनुपाल हर साल किया जाता है। यह पालन केवल समारोह की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष के प्रत्येक सप्ताह को 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के रूप में मनाने का प्रयास करना चाहिए। तभी हम समृद्ध भारत के अनुरूप सतर्क भारत की अपनी वांछित आकांक्षा को प्राप्त कर सकते हैं।



एनईसेक स्थापना दिवस चित्रकला प्रतियोगिता, सुश्री मोमिता कर्मकार, प्रथम पुरस्कार



एनईसेक स्थापना दिवस चित्रकला प्रतियोगिता, श्रीमती सुनयना गोस्वामी, द्वितीय पुरस्कार

चैटजीपीटी (ChatGPT) के साथ बातचीत



विपिन कुमार राय
सहायक



विपिन: अरे चैटजीपीटी, मैं आपके बारे में जानने को उत्सुक हूँ। क्या आप मुझे अपने बारे में कुछ बता सकते हैं?

चैटजीपीटी: बिल्कुल, विपिन। मैं ओपन ए.आई. द्वारा विकसित एक विस्तृत भाषा मॉडल हूँ। मेरे आर्किटेक्चर को जीपीटी-3.5 कहा जाता है, जिसका अर्थ है "जेनरेटिव प्री ट्रेड ट्रांसफार्मर 3.5"। मानव-जैसी भाषा को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम होने के लिए मुझे भारी मात्रा में टेक्स्ट डेटा पर प्रशिक्षित किया गया था।

विपिन: यह काफी चित्ताकर्षक है! आपको वास्तविक रूप में कैसे प्रशिक्षित किया गया?

चैटजीपीटी: मुझे बिना पर्यवेक्षित शिक्षण(अन सुपरवाइज्ड लर्निंग) नामक तकनीक का उपयोग करके प्रशिक्षित किया गया था। इसका मतलब यह है कि मुझे कोई विशिष्ट निर्देश या लेबल वाला डेटा नहीं दिया गया था। इसके बजाय, मुझे किताबों, लेखों और वेबसाइटों जैसे विभिन्न स्रोतों से बड़ी मात्रा में टेक्स्ट डेटा दिया गया। मेरा लक्ष्य मानव भाषा के ढाँचा और संरचनाओं को सीखना था, ताकि मैं ऐसा पाठ तैयार कर सकूँ जो ऐसा लगे कि यह किसी मानव द्वारा लिखा गया था।

विपिन: यह अद्भुत है! आपको विकसित होने में कितना समय लगा?

चैटजीपीटी: मुझे कई वर्षों के दौरान विकसित किया गया था। ओपन ए.आई. के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा मॉडल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जो सटीक और कुशल

दोनों हो। उन्होंने मुझे 175 बिलियन से अधिक मापदंडों पर प्रशिक्षित किया, जो कि GPT-2 जैसे पिछले मॉडलों की तुलना में बहुत अधिक है। प्रशिक्षण प्रक्रिया कम्प्यूटेशनल रूप से बहुत गहन थी और इसके लिए बहुत सारे संसाधनों की आवश्यकता थी।

विपिन: मैं कल्पना नहीं कर सकता हूँ! आप किस तरह की चीजें कर सकते हैं?

चैटजीपीटी: मैं बहुत सी चीजें कर सकता हूँ। मेरा मुख्य कार्य मुझे दिए गए संकेतों के आधार पर मानव जैसा पाठ उत्पन्न करना है। उदाहरण के लिए, आप मुझसे एक कविता, एक कहानी, या एक समाचार लेख लिखने के लिए कह सकते हैं, और मैं ऐसा पाठ तैयार करूँगा जो ऐसा लगे कि यह किसी इंसान द्वारा लिखा गया हो। मैं सवालों का जवाब भी दे सकता हूँ, भाषाओं का अनुवाद भी कर सकता हूँ और यहां तक कि कोड भी तैयार कर सकता हूँ।

विपिन: वाह, आप तो हर काम में माहिर हैं! टेक्स्ट उत्पन्न करने में आप कितने सटीक हैं?

चैटजीपीटी: मैं काफी सटीक हूँ, लेकिन मैं संपूर्ण सटीक नहीं हूँ। अभी भी कुछ मामले हैं जहां मैं ऐसा लेख उत्पन्न करता हूँ जिसका कोई मतलब नहीं है या व्याकरणिक रूप से गलत है। हालाँकि, ओपन ए.आई. के शोधकर्ता हमेशा मेरी सटीकता में सुधार करने और मानव-जैसे पाठ उत्पन्न करने में मुझे और भी बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

बिपिन: यह जानकर अच्छा लगा। पर जब आपके जैसे उपकरण का उपयोग करने की बात आती है तो किस प्रकार के नैतिक विचार होते हैं?

चैटजीपीटी: यह बहुत बढ़िया सवाल है, बिपिन। एक एआई मॉडल के रूप में, मेरी अपनी कोई नैतिकता या मूल्यबोध नहीं हैं। यदि मुझे ऐसा करने के लिए कहा जाए तो मैं ऐसा लेख तैयार कर सकता हूँ जो नस्लवादी, लिंगभेदी या अन्यथा आपत्तिजनक हो। हालाँकि, ओपन ए.आई. के शोधकर्ता कृत्रिम बुद्धिमत्ता(ए.आई.) के आसपास के नैतिक विचारों के बारे में बहुत जागरूक हैं, और उन्होंने मुझे हानिकारक सामग्री उत्पन्न करने से रोकने के लिए कुछ सुरक्षा उपाय लागू किए हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने घृणास्पद भाषण या ग्राफिक हिंसा जैसी कुछ प्रकार की सामग्री उत्पन्न करने की मेरी क्षमता को प्रतिबंधित कर दिया है।

बिपिन: सुनकर अच्छा लगा। आपके विचार में आपका विश्व पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ेगा?

चैटजीपीटी: यह निश्चित रूप से कहना कठिन है, बिपिन। लेकिन मुझे लगता है कि मुझमें मानव-जैसी भाषा उत्पन्न करने के लिए एक बहुत शक्तिशाली उपकरण बनने की क्षमता है। मेरा उपयोग लेख, कहानियाँ और यहाँ तक कि किताबें लिखने के लिए भी किया जा सकता है। मेरा उपयोग लोगों को सवालों के जवाब देने और जानकारी प्रदान करने के लिए भी किया जा सकता है। हालाँकि, ए.आई. के नौकरी बाजार पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ-साथ ए.आई. के दुरुपयोग या दुरुपयोग की संभावना के बारे में भी चिंताएं हैं। यह महत्वपूर्ण है कि लोग मेरी तरह ए.आई. साधनों का जिम्मेदार और नैतिक तरीके से उपयोग करें।

बिपिन: मैं पूरी तरह सहमत हूँ। आपके अनुसार भविष्य में ए.आई. प्रौद्योगिकी में किस प्रकार के सुधार किये जायेंगे?

चैटजीपीटी: मुझे लगता है कि भविष्य में ए.आई. तकनीक में बहुत सारे सुधार होंगे। एक क्षेत्र मेरे जैसे भाषा मॉडलों की सटीकता और दक्षता में सुधार करना करने में फोकस करना। हम संभवतः और भी बड़े और अधिक जटिल मॉडल विकसित होते देखेंगे, जो और भी अधिक परिष्कृत और सूक्ष्म पाठ उत्पन्न करने में सक्षम होंगे। हम संभवतः ग्राहक सेवा पूछताछ का उत्तर देने या कानूनी दस्तावेज़ तैयार करने जैसे विशिष्ट कार्यों के लिए अधिक विशिष्ट भाषा मॉडल विकसित होते देखेंगे।

ध्यान देने योग्य एक अन्य क्षेत्र ए.आई. मॉडल विकसित करना होगा जो कम उदाहरणों से सीख सकता है। इससे छोटी कंपनियों और संगठनों के लिए भारी मात्रा में डेटा तक पहुंच की आवश्यकता के बिना अपने स्वयं के ए.आई. मॉडल विकसित करना आसान हो जाएगा। हम संभवतः ए.आई. मॉडल विकसित करने में और अधिक प्रगति देखेंगे जो छवियों और ऑडियो जैसे कई प्रकार के चीजों से सीख सकते हैं, जो स्वायत्त ड्राइविंग या वर्चुअल असिस्टेंट जैसे अधिक परिष्कृत अनुप्रयोगों को सक्षम करेगा।

ए.आई. से जुड़े नैतिक विचारों पर और यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि ए.आई. उपकरण जिम्मेदार और नैतिक तरीके से विकसित और उपयोग किए जाएं, इस पर भी शोध जारी रहेगा। इसमें ए.आई. मॉडल कैसे काम करते हैं यह समझने के बेहतर तरीके, साथ ही ए.आई. सिस्टमस की ऑडिटिंग और निगरानी के बेहतर तरीके विकसित करना शामिल होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे पक्षपातपूर्ण या हानिकारक नहीं हों।

बिपिन: मेरे तो रोंगटे खड़े हो रहे हैं। क्या आपके पास उन लोगों के लिए कोई सलाह है जो ए.आई. के बारे में अधिक जानना चाहते हैं?

चैटजीपीटी: ज़रूर! जो लोग ए.आई. के बारे में अधिक सीखना चाहते हैं उनके लिए बहुत सारे बेहतरीन संसाधन मौजूद हैं। कुछ अच्छे शुरुआती बिंदुओं में कौरसेरा या उडासिटी द्वारा पेश किए गए ऑनलाइन पाठ्यक्रम, साथ ही स्टुअर्ट रसेल और पीटर नॉरविग द्वारा "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच" जैसी किताबें शामिल हैं।

बहुत सारे बेहतरीन ऑनलाइन समुदाय और फ़ोरम भी हैं जहां लोग प्रश्न पूछ सकते हैं और ए.आई. के बारे में ज्ञान साझा कर सकते हैं। इनमें रेडिट के आर/आर्टिफिशियल और आर/मशिन लर्निंग समुदायों के साथ-साथ ए.आई. स्टैक एक्सचेंज जैसी जगहें शामिल हैं।

कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बात है जिज्ञासु बने रहना और सीखते रहना। ए.आई. एक तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है, और इसमें कुछ नया करने के लिए बहुत कुछ है।

मजेदार तथ्य: मेडिकल, टीए/डीए, आकस्मिकता के बारे में मेल, ईमेल के माध्यम से भेजी जाने वाली पे-स्लिप्स, लेखा अनुभाग, एनईसैक के लिए एक्सेल में चैट जीपीटी द्वारा लिखे गए विजुअल बेसिक कोड के कारण संभव हो पाई।

लाश कहा गयी?



श्री अंजन देबनाथ
वैज्ञानिक / अभियंता- 'एसई'



"कल रात मेरे घर से एक लाश चोरी हुई है।" टेबल के उस पार बैठे कुंवर प्रताप देओ सिंह की बात सुन कर मेरे होश उड़ गए और कप से छलक के चाय पेंट पर जा गिरी। मेरे गले से हल्की सी आवाज़ निकली थी और कुंवर ने मेरे तरफ देखा। उनके राज घराने का चेहरा फिलहाल एकदम साधारण लग रहा था और उनके आखों में वही खौफ दिख रहा था जो दरवाजा खोलने के बाद मुझे दिखाई थी। "लाश? किसकी लाश?" आवाज़ बेशक कि.कि.रा. का था पर सवाल मेरे ही थे। "चंद्रचूड़ की" कुंवर का चेहरा एक लम्हें के लिए दर्द से उमर उठा लेकिन जब फिर से वे बोले तो उनकी आवाज साधारण हो चुकी थी, "मेरे एस्टेट का मॅनेजर था। महल में ही रहता था।"

कि.कि.रा. का चेहरा देख के मन की बात समझ पाना मेरे बस की बात नहीं थी पर उसके चुप रहने के मौकें में मैं कुंवर पर टूट पड़ा, "आप क्या बोल रहे हैं ? चंद्रचूड़ से तो हम लोगो की कल शाम को ही बात हुई है। वह मर कैसे सकता है?" बात पूरी होने से पहले ही मुझे अपनी गलती का पता लग गया था, तहकीकात के इस हिस्से को कि.कि.रा. कुंवर से छुपारखें थे। कि.कि.रा. के चेहरे पर नाखुशी साफ थी और मेरे लिये आखों में अंगारे झलक रहे थे। मैं मुँह नीचे कर अपने पेंट पर गिरे चाय के निशान को देखने लगा। "आपलोग चंद्रचूड़ से कल शाम को...? मि. राय, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।" कुंवर के चेहरे पर खौफ अब हैरानगी में बदल गई थी। "कुंवर प्रताप, आपके केस के मामले में हमलोग चंद्रचूड़ से पुछताछ कर रहे थे कुछ दिनों से, आपको कुछ बताने से हमने ही मना किया था।" कुंवर कुछ देर तक बस कि.कि.रा. को देखता रहा पर थोरी देर के बाद सिर हिलाकर सहमति दिया। पर

कि.कि.रा. ने अपनी पकड़ हल्की नहीं होने दी, "लगभग सारे आठबजे हमारी बात खत्म हुई थी, चंद्रचूड़ की मौत कैसे हुई कुंवर ? और आपके घर से लाश चोरी ? मुझे पूरी बात बताइए।" चाय की खालीकप को टेबल पर रखने के कुछ देर बाद कुंवर ने पिछली रात की आपबीती बताई, जिसे सुनके कि.कि.रा. के भी होश उड़ गए।

भूतपूर्व मैजिश्यन किंकर किशोर राय उर्फ कि.कि.रा. के अजीब शौक में एक था निलामी से पुराना सामान खरिदना। पूरे कोलकाता में जिधर भी कोई भी निलामी की खबर मिलती, कि.कि.रा. उधर पहुंच जाते थे। ऐसा नहीं की बाप-दादा की रखी हुई बहुत पैसे कि.कि.रा. के पास थे पर शोक बड़ी बला है। प्राइवेट इन्वेस्टिगेटर का काम करके जितनी आमदनी होती थी, खर्चा उससे कई ज्यादा था।

कुंवर कहने लगे, "मैं परसों ही चेन्नई से लौटा हूँ। तकरीबन एक महीना मैं बिज़नस के सिलसिले में उधर था। कल सारादिन चन्द्रचूड़ से महल की खोज-खबर लेने में हीबीत गया। हमारे कुछ मुकदमें चल रहे हैं मेनें तो आपको बताया होगा रायबाबू, उनके बारे में सोच-सोच कर ही नींद उड़ गई थी। सिगरेट जला कर मैं बालकनी में टहल रहा था कि अचानक एक हल्की सी चीख और थोड़े ही देर में बंदूक चलाने की आवाज़ सुनाई दी। हैरानी मुझे इस बात की हुई के पूरे महल में बंदूक एक मेरे ही पास है, मैंने तुरंत घर में आ कर बंदूक को देखा तो वह जैसे का वैसा दीवार पर टंगी हुई थी, फिर बाहर आ कर बालकनी से देखा तो अंधेरे में ज्यादा कुछ दिख नहीं रहा था। अचानक मेरे घर से दरवाजा खटखटाने की आवाज़ आई और मैं दरवाजे की ओर दौड़ा। दरवाजा खोलते ही चन्द्रचूड़ मेरे हाथों में

आ गिरा जैसे मानो दरवाजे पर वह मेरा इंतजार कर रहा हो।" लगातार बोलने के बाद अब कुंवर हांफ रहे थे, उनके मुंह पर पसीने की बूँदें झलक रही थीं जिसका कारण सिर्फ गर्मी नहीं थी।

कि.कि.रा.ने पूछा, "माफ कीजिए, तकरीबन कितने बजे होंगे तब?"

कुंवर : "यही कुछ बारह सारे बारह बजे होंगे, घड़ी तो नहीं देखी थी, पर बारह के बाद ही हुआ होगा क्योंकि कुछ दिनों से बारह बजे करंट ऑफ हो रहा था, और जैसा मैंने बताया कि तब बाहर अंधेरा था।"

कि.कि.रा.: "ठीक है, बताइए आगे क्या हुआ।"

कुंवर : "हाँ, चन्द्रचूड़ जब मेरी बाहों में आ कर गिरा तब भी उसकी सांसें चल रही थी, उसके कपड़े खून से लथपथ थे, वह कुछ बोलने की कोशिश कर रहा था, पर मैं इतना घबड़ा गया था कि मुझे पहले कुछ ठीक से समझ नहीं आया था और कुछ समय के बाद मेरे हाथों में ही उसने दम तोड़ दिया।"

पूरे कमरे में सन्नाटा छाया था, कुंवर सिर झुकाए बैठे थे, कि.कि.रा. गहरी सोच में डूबे थे और अनजाने में ही एक सिगरेट उनके उंगलियों में आ गया था। डाक्टर ने साफ - साफ कह दिया था कि सिगरेट कि.कि.रा. के लिए जहर है और कि.कि.रा. सिगरेट छोड़ने की कोशिश भी कर रहे थे। पर कभी-कभी जब वह गहरी सोच में रहते थे तो अपने आप सिगरेट उन के हाथ में आ जाती थी। कहा से आया? पुछने से कहते थे 'मैजिक'। हालांकि भाभी जी को देखते ही या उनकी आवाज़ आने से भी अपने आप गायब भी हो जाती थी। मैजिक। थोड़ी देर बाद कि.कि.रा. ने पूछा, "और लाश चोरी की बात क्या कह रहे थे?"

"हाँ, होश संभालते ही मैं तुरंत चीख-चीख कर सबको बुलाने लगा। सबसे पहले आया- रामा और सब देखकर वह रोने लगा। मैंने उसे धमकाया और सबको जगाने और इन्स्पेक्टर सिन्हा को खबर देने भेजा। अचानक मुझे याद आया केउर्मी नहीं आई थी, जबकि सबसे पहले मेरी चीख उसे ही सुनाई देनी चाहिए थी। मैं उसके कमरे में गया तो वह बेहोश पड़ी थी और उसके सिर पर हल्की सी चोट दिख रही थी और खून भी निकल रहा था। हल्के से धक्का देते-देते वह धीरे-धीरे होश में आई। उसने कहा कि वह सो रही थी अचानक खिड़की खुलने की आवाज़ से उसकी नींद खुली। धीमी रोशनी में उसे लगा के बिस्तर

के नजदीक कोई चलफिर रहा था। डर से उसके गले से हल्की चीख निकली थी और एक बड़े जानवर जैसे हाथ ने उसको दबोच लिया, सिर पर भारी कुछ से वार हुआ और वह बेहोश हो गई। मैंने उसको चन्द्रचूड़ के बारे में बताया तो वह चौक गई, बंदूक की आवाज़ उसने नहीं सुनी थी। हम दोनों मेरे कमरे में वापस आए तो चन्द्रचूड़ की लाश वहां नहीं थी। मैं इतना हैरान अपने जिंदगी में कभी नहीं हुआ हूँ।" थोड़ा रुक कर फिर उसने बोला, "सिन्हा जी को भी आ कर कुछ नहीं मिला सिवाए फर्श पर सूखे खून के धब्बों के, एक लाश को इतनी जल्दी कैसे कही पर कोई ले जा सकता है यह उन्हें भी समझ नहीं आ रहा था। आप तो मैजिशियन रह चुके हैं, आपको क्या लगता है यह कैसे हो सकता है?"

इतनी देर सुनने के बाद अब कि.कि.रा. ने बोला, "हो सकता है, लेके जाने की भी जरूरत नहीं हो, अगर लाश लाश ना हो, तो वह खुद ही चलके जा सकता है।" कुंवर कुछ देर तक ऐसे बैठा रहा जैसे वह सुन रहा हो पर कुछ समझ नहीं पा रहा हो, फिर वह बोले, "मतलब?"

कि.कि.रा. : "कुंवर, मेरा विश्वास है कि चन्द्रचूड़ की मौत नहीं हुई है। वह जिंदा है। आपका सीमंत हीरा क्या सही सलामत है?"

सीमंत हीरे का नाम सुनते ही कुंवर का चेहरा फिका पड़ने लगा। यह एक बेशकीमती हीरा था जो कुंवर के खानदान में पीढ़ियों से था और इनकी माने तो जबतक सीमंत हीरा इनके पास रहेगी राजघराने में खुशहाली बरकरार रहेगी। इसी के चोरी होने के डर से ही कुंवर कि.कि.रा. के पास आए थे, करीबन एक महीने पहले ही कुंवर के घर से इसकी चोरी की कोशिश की गई थी।

अब कुंवर बोले, "मैं देख नहीं पाया ठीक से, मुझे लगता है कि मैं आपका इशारा समझ पा रहा हूँ, मैं तय होते ही आपको फोन करता हूँ।"

कुंवर चले जाते ही मैंने कि.कि.रा. को घेर लिया, "तो तुम्हें लगता है कि चन्द्रचूड़ ने मौत का नाटक करके सीमंत हीरा चुराया है।"

कि.कि.रा. : "लगता नहीं, मैं निश्चित हूँ।"

मैं : "पर बंदूक की गोली? खून के दाग? तुमने शायद देखा नहीं पर कुंवर के हाथों में अभी भी खून के धब्बे थे।"

कि.कि.रा. : "वाह सुनील, कमाल का ऑब्ज़रवेशन किए हो, पर पूरा नहीं।"

मैं खुश होने कि बजाए हताश होकर पुछा, "पूरा ऑब्ज़रवेशन क्या है?"

कि.कि.रा. : "चाय की कप को देखो ज़रा।"

टेबल पर तीन खाली कप रखी थी पर जो कप से कुंवर पी रहे थे उस पर लाल रंग के धब्बे साफ नज़र आ रहे थे। मैं धीरे-धीरे चेयर से उठते हुए कहा, "ओ माय गॉड, मतलब यह खून नहीं बस लाल रंग का केमिकल था, मैं तो पूरा धोखा ही खा गया।"

कि.कि.रा. : "सिर्फ तुम ही नहीं, चन्द्रचूड़ ने पुलिस को भी धोखा दिया है।"

मैं : तुम राजमहल नहीं जाओगे चंद्रचूड़ को पकड़ने का इंतजाम तो करना होगा।।

कि.कि.रा. : "यह काम पुलिस ही कर लेगी, यह बताओं कल जब चन्द्रचूड़ से तुम्हारी बात हुई तो कुछ नोटिस किया था तुमने?"

मैं : "नहीं, उसकी आवाज़ ठीक से नहीं आ रही थी, ट्रेन की सिटी बज रही थी।... अरे, मतलब वह स्टेशन गया था, मतलब वह ट्रेन से भाग रहा है, तब तो स्टेशनमास्टर के पास ही उसके रिजर्वेशन की डिटेल मिलेगी।"

इतना बोलके मैं हांफने लगा। कि.कि.रा.के तरफ देखा तो उसके मुँह में हल्की मुस्कान और आँखों में प्रशंसा थी।

उसने कहा, "दिन-ब-दिन काफी तरक्की हो रही है साहब की। जाओ जा कर सिन्हा को फोन करके यह बता दो। अगर मेरा अंदाजा सही हुआ तो उसने दो अलग-अलग रूट की टिकटें काटी होगी पुलिस को गुमराह करने के लिए। उर्मी के नाम से खोजने बोलो, मिल जाना चाहिए।"

मैं : "मतलब ? उर्मी भी? दोनों मिलकर? पर क्यों अच्छा ? अब समझा। यह तुमको कैसे पता लगा?"

कि.कि.रा. : "लग तो रहा था पर आज कुंवर की बात से सब साफ हो गया। चन्द्रचूड़ ने पहले उर्मी के कमरे में आकर उस के सिर पर रंग लगाया, उर्मी की चीखने के बाद फिर नीचे आ कर भाड़े में लिया हुआ बंदूक फायर करके फिर कुंवर के कमरे में आया होगा।"

तकरीबन एक घंटे के बाद कुंवर का फोन आया जिसमें उन्होंने बताया कि सीमंत हीरा और उनकी बहन उर्मी दोनो लापता है। इन्सपेक्टर सिन्हा ने पता लगा लिया था के उर्मी एक बूढ़े आदमी के साथ मुम्बई की ट्रेन पकड़ी थी सवेरे की। यह सुनते ही कुंवर फोन पे ही रो पड़े। कि.कि.रा. ने कुंवर को शांत करते हुए कहा, "सीमंत हीरा ढुंढने में मैं आपकी मदद कर सकता हूँ पर उर्मी और चन्द्रचूड़ को आप माफ कीजिए और आशीर्वाद दीजिए। नई जिंदगी में उन्हें आशीर्वाद की जरूरत होगी।"

फोन रखकर चेयर पर आकर बैठते-बैठते कि.कि.रा. ने मुझसे कहा, "शाम को श्याम-बाज़ार चलोगे क्या? एक एंटिक ऑक्शन में शाहजहां की रूमाल नीलामी के लिए रखा जाएगा।"



एनईसैक स्थापना दिवस, 2023- फोटोग्राफी प्रतियोगिता में श्री देवप्रतीम दास, जे.आर.एफ, प्रथम पुरस्कार विजेता।

बैम्बो ट्रेकिंग (मावरिंगखांग ट्रेक) मेघालय में साहसिक अभियान



दारजी हरीश कुमार - NS00050
तकनीकी सहायक, सी.एम.डी.

जैसे ही सूरज मेघालय के शांत परिदृश्य में उदित होने लगा, छह लोगों की हमारी टोली, जिसमें- मैं हरीश, सुमंत, प्रदेश, ऋतु और युगल जोड़े निलय तथा उनकी पत्नी स्मृति शामिल है, प्रकृति की गोद में एक रोमांचक यात्रा में निकल पड़े। हमारी मंजिल: मनमोहक बांस ट्रेक, मेघालय के बीचोबीच छिपी एक जगह, जो अपनी सुंदरता और रोमांच के लिए जानी जाती है। दिन आरंभ हो चुका था और सुबह करीब 7.00 बजे जब हम उमियम से निकले तो हमारा उत्साह सातवें आसमान पर था। हम सुबह लगभग 9.00 बजे अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचे और अभी ट्रेक शुरू करने वाले थे।

मात्र एक जोड़े चप्पल के साथ इस ट्रेक में शामिल होने चला आया। परंतु उसे वास्तविकता का अहसास तब हुआ जब उसे यह ज्ञात हुआ कि या ट्रेक 800 मीटर का नहीं बल्कि उससे कहीं अधिक चुनौती पूर्ण और साहसिक था, जो एकबार में लगभग 1800 मीटर और आनेजाने में कुल 3600 मीटर था। यह जानकर उसके चेहरे का रंग उड़ गया, जिसे देखकर हमारे दिल में हँसी के फव्वारे फुट पड़े। परंतु इस छोटी सी घटना से विचलित हुए बिना, अब हम इस अप्रत्याशित मोड़ का अधिकतम लाभ उठाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर बैम्बो ट्रेकिंग पर निकल पड़े।



इसी के साथ हम सभी बहुत रोमांचित थे पर हमारे बीच सुमंत इस ट्रेक के वास्तविक लंबाई से अनभिज्ञ था। वास्तव में मैंने और ऋतु ने सुमंत को अपने साथ इस यात्रा में शामिल करने के उद्देश्य से यह कहते हुए झांसा दिया था कि ट्रेक केवल 800 मीटर का है और वह भी इसी अनुसार



बैम्बा ट्रेक हमें घने जंगलों, बहते क्रिस्टल साफ पानी, बांस के पुलों के माध्यम से ले गया, जिससे मेघालय के हरे-भरे परिदृश्यों का अद्भुत नजारा देखने को मिला। अक्सर धुंध में डूबा रहनेवाला यह कठिन सफर कमज़ोर दिलों वालों के लिए नहीं था। हमने जंगल के तलहट से ऊपर लटके हुए कई बांस के पुलों को पार किया, एक ऐसा अनुभव

जो खतरे के संकेत के साथ आया, जिसने हमारी यात्रा में रोमांच की एक अलग परत जोड़ दी।

अभी हम आधे रास्ते पहुंचे ही थे कि अचानक बूदा-बांदी शुरू हो गई, मानों स्वर्गलोक से देवगण वर्षा के रूप में हमें आशीष देने लगे। बारीश की बूंदें बांस पर मोतियों की तरह चमक रही थी, जिससे बांस का पूरा ट्रैक जादू सा चमकने लगा। यह पूर्ण मनोरंजन का समय था, बारीश से भीगे बांस के पेड़ों के बीच ट्रैकिंग, और हमने इसे खुले मन से स्वीकार किया।

घंटों की ट्रैकिंग के बाद, हम अंततः अपने साहसिक कार्य के शिखर पर पहुंच गए। यात्रा के अंत में जिस दृश्य ने हमारा स्वागत किया वह किसी चमत्कार से कम न था। सूरज की रोशनी चंद्रवा के बीच से गुज़री और दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों और हरियाली के मनोरम दृश्य को रोशन कर दिया। यह हमारे असाधारण, साहसिक यात्रा को चिर स्मरणीय बनाते हुए, अद्भुत फोटों और रीलों को कैप्चर करने के लिए आदर्श पृष्ठभूमि थी।

वापस लौटते समय, हमारे यात्रा में एक नया मोड़ आया। अचानक प्रदेश का पैर ज़रा सा फिसला गया जिससे इस ट्रैक में एक आतंक का माहौल बन गया। लौटते समय सभी पर यात्रा की थकावट स्पष्ट दिखने लगी थी और इस दौरान हम सभी ताज़गी भरी डुबकी के लिए तरस रहे थे। शुरू में हमने पास ही के एक तालाब में तैरने की योजना बनाई पर वह शीघ्र ही बंद हो गया जिससे हमें निराशा ही हाथ लगी। हालाँकि हमारे दृढ़ संकल्प ने एक वैकल्पिक स्थान खोजने के लिए प्रेरित किया, किसी तरह हम क्रिस्टल-साफ जलधारा का पता लगाने में कामयाब रहें।

प्रदेश और मैं इस स्वच्छ जल में तैरने की अपनी तीव्र इच्छा को रोक न सकें और जल्द ही हम पानी में तैरने का आनंद लेने लगे। ऋतु भी खुद को रोक न सकी और वह भी हमारे साथ जुड़ गई। पानी हमारी त्वचा पर रेशम सी



प्रतीत हो रही थी। हमारे चारों ओर छोटी-छोटी मछलियाँ भी तैरने लगी जिससे हमें पानी के भीतर फीश-स्पा का अद्भुत अनुभव होने लगा और इससे हम और अधिक आनंदित, तरोताजा अनुभव करने लगे। पानी के भीतर यह एक छिपा हुआ मौज-मस्ती से भरा आनंद का क्षण था जिसे हम सभी हमेशा याद रखेंगे।

समय के साथ साथ हमारी खुशी दुगुनी होती चली गई और अधिक लोगों के जुड़ने से यह तालाब एक खुशी का केंद्र बन गया। अनिच्छा से ही, पर अब हमें मौज-मस्ती से भरे इस तालाब को अलविदा कहने का समय आ गया था, लेकिन हमारी सहज तैराकी की यादें, हमारे बांस ट्रैक साहसिक कार्य के सबसे यादगार क्षणों में से एक होगी।

उमियम वापस जाते समय अपनी यात्रा की थकान को कुछ ओर कम करने के लिए हम रास्ते में एक शानदार भोजनालय में रुके और पेट पूजा की। हँसी-मजाक और आपसी बातचीत ने इस यादगार यात्रा के भोजन को भी और स्वादिष्ट बना दिया। मेघालय की मनमोहक सुंदरता हमारे दिलों में बस गई और बौम्बो ट्रैकिंग की हमारी साहसिक अभियान हमारी यात्रा डायरी में एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

"देश की शान है हिंदी, देश की पहचान है हिंदी, क्योंकि हर भारतीय के दिल में विराजमान हैं 'हिंदी'।"

Anonymous

एक आश्चर्य की मीनार : फ्लोरेंस से पीसा की झुकी मीनार तक एक दिन की यात्रा



डॉ चंदन गोस्वामी

जब कोई इटली के बारे में सोचता है, तो उत्कृष्ट कला, शानदार व्यंजन और ऐतिहासिक स्थलों की छवियां अक्सर दिमाग में आती हैं। ऐसा ही एक प्रतिष्ठित स्थल पीसा की झुकी मीनार है। पीसा के सुरम्य शहर में स्थित, इस झुके हुए आश्चर्य नेसदियों से दुनियाभर के यात्रियों के दिल और दिमाग को लुभाया है। जब कि फ्लोरेंस अपने आप में कला और इतिहासका खजाना है, फ्लोरेंस से पीसा की झुकी मीनार तक की एक दिन की यात्रा एक और इतालवी रत्न का पता लगाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। इस लेख में, आपको इतिहास, वास्तुकला और आनंददायक अनुभवोंको उजागर करते हुए फ्लोरेंस से पीसा तक की आभासी यात्रा पर ले जाया जाएगा।

हम (मैं, मेरी पत्नी औ रबेटा) 13 मई 2023 की एक तेज़धूपवाली सुबह लगभग 11 बजे फ्लोरेंस में उतरे। पुनर्जागरण का उद्गमस्थल फ्लोरेंस अपनी कला, संस्कृति और स्थापत्य चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है। जैसे ही आप पीसा की झुकी मीनार की ओर अपनी यात्रा शुरू करेंगे, आपको आधुनिक और ऐतिहासिक इटली का सही मिश्रण का अनुभव होगा।

हमने दोपहर 1:30 बजे पीसा के लिए अपनी बस यात्रा शुरू की। फ्लोरेंस से पीसा तक की सड़क यात्रा में लगभग एक घंटा लगता है, जिससे यह आप के गंतव्य तक पहुंचने का एक सुविधाजनक और आरामदायक तरीका बन जाता है। सुरम्य टस्कन ग्रामीण इलाकोंसे होकर गुजरने वाली सुंदर यात्रा अपने आप में एक आकर्षण है। आपको रास्ते में लुढ़कती पहाड़ियाँ, अंगूर के बागों और आकर्षक गांवों की



प्रशंसा करने का अवसर मिलेगा। हम दोपहर 2:30 बजे के आसपास पीसा पहुँचे और उस समय तक घने बादलों के कारण आसमान गहरा काला हो गया था।

हमारी बस से उतरते ही हम पियाज़ा देई मिराकोली की ओर चल पड़े। पियाज़ा देई मिराकोली; आमतौर पर "चमत्कारों का वर्ग" के रूप में जाना जाता है, यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और पीसा की झुकी मीनार का घर है। यह विशाल चौराहा वास्तु कला के चमत्कारों से सुशोभित है, जिसमें डुओमो (पीसा कैथेड्रल), बैपटिस्टी, और कैम्पोसेंटो मोनुमेंटेल (स्मारकीय कब्रिस्तान) शामिल हैं। रोमन स्क्व और गॉथिक वास्तुकला का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण पीसाके ऐतिहासिक महत्व का प्रमाण है।

पीसा कैथेड्रल, अपने आश्चर्यजनक अग्रभाग और जटिल आंतरिकभाग के साथ, मध्ययुगीन वास्तुकला की उत्कृष्ट



कृति के रूप में खड़ा है। जब आप इस के पवित्र हॉलों को देखेंगे तो आप निश्चितरूप से जटिलनक्काशी, संगमरमर के स्तंभों और आश्चर्यजनक रंगीन ग्लास खिड़कियों की प्रशंसा करेंगे। पीसा की बैपटिस्टरी एक गोलाकार संरचना है जो अपनी असाधारण ध्वनि की के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटक पियाज़ा देई मिराकोली और इसके आसपास के मनोरम दृश्य के लिए शीर्ष पर चढ़ सकते हैं। स्मारकीय कब्रिस्तान, जो अपने गॉथिक मेहराबों और प्राचीन कब्रों के लिए जाना जाता है, एक शांत और चिंतनशील वातावरण प्रदान करता है। ऐसा माना जाता है कि यहां धर्मयुद्ध के दौरान पवित्र भूमि से लाई गई मिट्टी रखी हुई है।

आखिरकार हम अपने सपनों की मंजिल वास्तुकला की विचित्रता का शिखर, पीसा की झुकी मीनार पर पहुंचें। यह एक चमत्कार और रहस्य दोनों है, जो हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करती है। माना जाता है कि पीसा की झुकी मीनार, या इतालवी में "टोरे पेंडेंटी पीसा", का निर्माण 1173 में शुरू होकर लगभग 199 वर्षों की अवधि में किया गया था। इसका मूल उद्देश्य पास के पीसा कैथेड्रल के स्वतंत्र घंटीघर के रूप में सेवा करना था। बेशक, टावर की सबसे विशिष्ट विशेषता इसका झुकाव है। हालांकि, झुकाव अनजाने में हुआ था, जो इसके निर्माण के दौरान नरम मिट्टी की अस्थिर नींव और अपर्याप्त अभियांत्रिकी के कारण

हुआ था। निर्माण के प्रारंभिक चरण के दौरान यह झुकना शुरू हुआ लेकिन अंततः स्थिर हो गया। मीनार को गिरने से रोकने के प्रयास सदियों से जारी हैं। हाल के वर्षों में, ढलान को ठीक करने और इसे आगंतुकों के लिए सुरक्षित बनाने के लिए मिट्टी हटाने सहित उन्नत अभियांत्रिकी तकनीकों का उपयोग किया गया है। आज, मीनार थोड़ा सा कोण पर झुक गया है, जिससे इसकी जिज्ञासा और बढ़ गई है। पीसा की झुकी मीनार पर चढ़ना एक अनिवार्य अनुभव है। मीनार में 294 सीढ़ियाँ हैं जो शीर्ष तक जाती हैं, जहाँ से पीसा और आसपास के ग्रामीण इलाकों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। हम अपने बेटे के साथ यात्रा कर रहे थे, इसलिए हम मीनार पर नहीं चढ़े। झुकी मीनार परिसर में म्यूजियोडेलेसिनोपी और म्यूजियोडेल'ओपेराडेलडुओमो भी शामिल हैं, जिसमें मीनार और पियाज़ा देई मिराकोली से संबंधित कलाकृति और ऐतिहासिक कलाकृतियों का एक प्रभावशाली संग्रह है।

अपने वास्तुशिल्प चमत्कारों से परे, पीसा स्थानीय संस्कृति, व्यंजन और मनोरंजन से भरा एक जीवंत वातावरण प्रदान करता है। पीसा के कुछ स्वादिष्ट व्यंजनों में उनका प्रसिद्ध सेसिना (चने के आटे का फ्लैटब्रेड), ताज़ा समुद्री भोजन और जेलाटो शामिल हैं। पीसा हर स्वाद और बजट के अनुरूप खाने के विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। पियाज़ा देई मिराकोली अक्सर सड़क पर प्रदर्शन करने वालों की मेजबानी करता है, जो ऐतिहासिक चौराहे पर जीवंतता का स्पर्श जोड़ता है। क्षेत्र की खोज के दौरान कोई भी व्यक्ति संगीत, कला और मनोरंजन का आनंद ले सकता है। आप स्थानीय दुकानों से स्मृतिचिन्ह ले सकते हैं, जिनमें झुकी मीनार की छोटी प्रतिकृतियाँ और कारीगर सामान शामिल हैं। स्थानीय बाज़ार आपके साथ पीसा का एक टुकड़ा घर लाने का अवसर प्रदान करते हैं। जबतक हमने अपना दर्शन पूरा किया तबतक बारिश शुरू हो गई और हम अपनी बस की ओर दौड़ पड़े।

फ्लोरेंस से पीसा की झुकी मीनार तक एक दिन की यात्रा न केवल एक वास्तुशिल्प चमत्कार को देखने के बारे में है, बल्कि इस आकर्षक इतालवी शहर के समृद्ध इतिहास और संस्कृति में खुदको डुबाने के बारे में भी है। पियाज़ा देई मिराकोली की आश्चर्यजनक वास्तुकला की पृष्ठभूमि के खिलाफ झुके हुए मीनार का संयोजन एक ऐसा दृश्य बनाता है जो अद्वितीय है। जब हम झुकी हुई मीनार और पीसा के खूबसूरत शहर की यादों के साथ फ्लोरेंस लौटे, तो हम अपने साथ इटली के ऐतिहासिक खजानों और इसके अनूठे स्थलों के स्थायी आकर्षण के प्रति गहरी सराहना लेकर आए। चाहे आप कलाप्रेमी हों, इतिहासप्रेमी हों, या बस अविस्मरणीय अनुभव चाहनेवाले यात्री हों, पीसा की झुकी मीनार की यात्रा एक सार्थक यात्रा है।

आदतें



डॉ. रेखा भराली गोगोई

वैज्ञानिक/अभियंता, 'एसएफ'

हम आदतें बदल देते हैं, आप शर्त बदल देते हो ।
हम शर्त मान लेते हैं, आप हालात बदल देते हो ।

अब तो हालात ऐसे हैं कि

ना हमें आप दिखाई देते हो, ना आपकी शर्त सुनाई देती है ।

पर कहते हैं न लोग
देर आये दुरुस्त आये,
जितने मुखौटे खुले
सँभलने लगे हम उतने ।

किसी के लिए खुद को न इतना बदलना
की आइना देखके खुद को ही न पहचान सके ।
हमारी आदतें हमारी पहचान है
और किसी के लिए उन्हें बदलना गवारा नहीं है हमें ।

भाग रहे थे हम जिस साये के पीछे,
पता चला साया नहीं,
वो तो एक जाल था,
निकलना जिससे मानो नामुमकिन था ।

इतना सुकून है ज़िंदगी में अब,
बता नहीं सकते,
पहले सोचते थे जिसके लिए
अभी उसी सोच पे हंसी आती है हमें ।

ज़िन्दगी



डॉ. अभय श्रीवास्तव

वैज्ञानिक/अभियंता, 'एससी'

ऐ ज़िन्दगी थोड़ा मुझे भी संभलने का मौका दें।
कही जिए जाने के चक्कर में, कुछ करना भूल गए,
तो वापस आने का कोई रास्ता भी नहीं है।
और तो और.....
पीछे मुड़कर देखने से, तेरा कोई वास्ता भी नहीं है।।

ऐ ज़िन्दगी ठहराव तो दूर, तू तो धीमी भी न हुई।
कितनी तेज़ है तेरे समय की सुई।।

बचपन को बचपन, जवानी को जवानी सा जीने न दिया।
तूने तो मुझे सुकून से बैठकर खाने-पीने न दिया।
ऐ ज़िन्दगी अब तो मुझे जीने का मौका दें,
जवानी न सही, तो कम से कम बचपन तो लौटा दें।।

हाँ मानता हूँ, कि दिया है तूने बहुत कुछ,
पर जो मैं चाहता हूँ कभी उसे भी तो होने दें।
ज़िन्दगी थोड़ा मुझे भी संभलने का मौका दें।
थोड़ा मुझे भी संभलने का मौका दें।

बस नारी रहने दो हमको



नमिता रानी पाल मित्रा

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

सीता से तुलना मत करना,
ना कहना मीरा सा बनना।
नारी है हम, बस वही रहने दो।
साधारण सी अपनी जीवन शैली,
साधारण सा त्याग है अपना।
कहा सीता सा धैर्य है हममें,
कहा मीरा सी भक्ति लापाए॥1॥

नहीं बनना है हमको महान अब,
नहीं किसी कसौटी में है खरा उतरना।
बस बाकी तुमसा इंसान ही रहने दो,
किसी से अब तुलना मत करना॥3॥

देवो सा पूजें यह चाह नहीं है,
चाह नहीं मिसाल बनें हम।
बस नारी रहने दो हमको।
बस रहने दो हमको॥5॥

ना द्रौपदी सी शक्ति है हममें,
जिससे दुःशासन का वध कर पाए।
आज कुछ यूं संकल्प करें हम,
कि बस नारी बनकर जी पाएं हम।
असाधारण की चाह नहीं कुछ,
साधारण जीवन ही हमको भाए॥2॥

अपना परिचय स्वयं बने हम,
अपने भय से खुद ही लड़े हम।
चलते चलते जो थक जाएं तो,
अपनी थकन मिटाए खुद हम।
बस नारी रहने दो हमको,
बस नारी रहने दो हमको॥4॥

महत्वपूर्ण इलकियाँ

एनईसैक ने अपना पहला संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम (एसटीपी) आयोजित किया

एनईसैक ने राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एनआरएससी), हैदराबाद और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग (आईआईआरएस), देहरादून के साथ संयुक्त रूप से 07-11 अगस्त, 2023 के दौरान पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष जोर देते हुए शासन के लिए अंतरिक्ष आधारित इनपुट पर एक सप्ताह का आवासीय संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में इसरो/अं.वि. केंद्रों के 21

वैज्ञानिकों/इंजीनियरों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों को कवर करने के लिए एन.आर.एस.सी., एस.ए.सी., आई.आई.आर.एस. और राज्य उपयोगकर्ता विभागों से प्रतिष्ठित संसाधन व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था। प्रतिभागियों के लिए आईआईएम, शिलांग की एक एक्सपोज़र यात्रा की व्यवस्था की गई थी।



"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

एनईसैक में राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग दिवस 2023 समारोह



राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग दिवस 2023 को इंडियन सोसाइटी ऑफ रिमोट सेंसिंग (आई.एस.आर.एस) के शिलांग चैप्टर और इंडियन सोसाइटी ऑफ जियोमैटिक्स (आई.एस.जी) के शिलांग चैप्टर ने 18 अगस्त, 2023 को एनईसैक के बाह्य-जनसंपर्क (आउटरीच) सुविधा में अर्ध दिवसीय कार्यक्रम के

साथ संयुक्त रूप से मनाया। आधे दिन के कार्यक्रम में इंटर स्कूल पेंटिंग और अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं, डॉ. जॉन मैथ्यू, एसोसिएट निदेशक, ईडीपीओ, इसरो मुख्यालय, द्वारा एक आमंत्रित व्याख्यान शामिल था।

"हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।"

पुरूषोत्तम दास टंडन (भारत रत्न)

एनईसैक ने अपना 23वां स्थापना दिवस मनाया



एनईसैक ने 11 सितंबर, 2023 को एक संक्षिप्त कार्यक्रम के साथ अपना 23वां स्थापना दिवस मनाया। एनईसैक के पूर्व निदेशक श्री केसी भट्टाचार्य ने "चंद्रयान के प्रक्षेपण की दिशा में एसएलवी से जीएसएलवी की उत्पत्ति" विषय पर स्थापना दिवस वार्ता दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जे गोस्वामी,

कार्यक्रम समन्वयक, आउटरीच और क्षमता निर्माण द्वारा किया गया और एनईसैक के प्रशासनिक अधिकारी श्री कुमार आनंद द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ। एनईसैक में राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह के पुरस्कार भी इस कार्यक्रम के अंत में प्रदान किये गये।

"मेरा मान है हिन्दी, मेरी शान है हिन्दी।"

Anonymous

एनईसैक ने 14 से 29 सितंबर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया

एनईसैक में 14 सितंबर 2023 से 29 सितंबर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया और इस दौरान कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जैसे- सुलेख प्रतियोगिता, शब्दावली प्रतियोगिता; निबंध लेखन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता; तस्वीर क्या बोलती है

और कविता पठन प्रतियोगिता। इसके अतिरिक्त एनईसैक कर्मचारियों के परिवार सदस्यों के लिए भी रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता और चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई थी।



"हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।"

डॉ. संपूर्णानंद

स्पेस ऑन व्हील्स: अरुणाचल प्रदेश भर में एक यात्रा



5-11 अक्टूबर, 2023 के दौरान अंतरिक्ष सप्ताह के चल रहे समारोह के हिस्से के रूप में, अरुणाचल प्रदेश के चयनित स्थानों में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए "स्पेस ऑन व्हील्स" बस को तैनात किया गया था। यह विज्ञान भारती (विभा) और इसरो की एक संयुक्त पहल है। बस ने जे.एन. कॉलेज पासीघाट में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के 800 से अधिक छात्रों को

आकर्षित किया। प्रदर्शनी बस ने पासीघाट में इंडिपेंडेंट गोल्डन जुबली गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल और डेइंग एरिंग मेमोरियल गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल का दौरा किया, जहां 1400 से अधिक स्कूली छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी रुचि बढ़ाने के लिए प्रदर्शनियों का पता लगाने का अवसर मिला।

"हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।"

मौलाना हसरत मोहानी



सचिव, डोनर मंत्रालय, भारत सरकार ने एनईसैक का दौरा किया



श्री चंचल कुमार, सचिव, उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय (डोनर मंत्रालय), भारत सरकार ने 19 नवंबर, 2023 को एनईसैक का दौरा किया, जिनके साथ श्री तनुंग जामोन, निदेशक, एस. एंड टी., उत्तर पूर्वी परिषद (एन.ई.सी), शिलांग भी थे। उन्होंने एनईसैक की विभिन्न सुविधाओं का दौरा किया और केंद्र के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की और केंद्र की विभिन्न परियोजनाओं और गतिविधियों का जायजा लिया एनईसैक के वैज्ञानिकों ने विभिन्न जियोपोर्टल्स और डैशबोर्ड सिस्टम जैसे एन.ई.आर.-डी.आर.आर. पोर्टल,

एन.ई.एस.डी.आर. पोर्टल, प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग डैशबोर्ड आदि का प्रदर्शन किया। सचिव, डोनर मंत्रालय ने एनईसैक द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की और उन्नत भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी को अपनाने वाले नए कार्यक्रमों के साथ आने का सुझाव दिया जो पूर्वोत्तर क्षेत्र की वृद्धि और विकास के लिए प्रासंगिक हैं। एनईसैक के निदेशक डॉ. एस.पी. अग्रवाल ने एनईसैक की पहली यात्रा के लिए सचिव, डोनर मंत्रालय को अपना आभार व्यक्त किया और एनईसैक कर्मचारियों की ओर से उनका अभिनंदन किया।

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

एनईसैक ने आरआरएससी-पश्चिम, जोधपुर में 43वीं आईएनसीए अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस - 2023 में भाग लिया

एनईसैक ने 6-8 नवंबर, 2023 के दौरान आरआरएससी पश्चिम, जोधपुर, राजस्थान में "सतत पारिस्थितिक तंत्र और भू-स्थानिक अर्थव्यवस्था के लिए डिजिटल कार्टोग्राफी में उभरते रुझान" पर 43वीं आईएनसीए अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस - 2023 में भाग लिया। यह कार्यक्रम इंडियन नेशनल कार्टोग्राफिक एसोसिएशन द्वारा आयोजित किया गया था और इसमें देश भर के विभिन्न प्रमुख संगठनों से प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

एनईसैक ने प्रदर्शनी में भाग लिया और विविध दर्शकों को हुए अपनी गतिविधियों का प्रदर्शन किया। वाइस एडमिरल अधीर अरोड़ा, एवीएसएम, एनएम, जो उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान सम्मानित अतिथि थे, जिन्होंने विभिन्न संगठनों के

अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों के साथ एनईसैक प्रदर्शनी स्टाल का दौरा किया और एनईसैक टीम के सदस्यों के साथ बातचीत की। डॉ. ध्रुवल भावसार और श्री हिमांशु ज्योति दास ने कार्यक्रम में भाग लिया और एनईसैक का प्रतिनिधित्व किया। निदेशक, एनईसैक ने "राष्ट्रीय विकास के लिए भू-स्थानिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने का रोडमैप" विषय पर पैनल चर्चा में मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। उन्होंने उत्तर पूर्वी राज्यों के विभिन्न लाइन विभागों से डेटा आवश्यकताओं को पूरा करने में एनईसैक की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए डेटा निरंतरता और आवृत्ति की आवश्यकता पर अंतर्दृष्टि साझा की।



एनईसैक स्थापना दिवस, 2023- चित्रकला प्रतियोगिता में सुश्री निकिता लाहिड़ी, जे.आर.एफ, तृतीय पुरस्कार विजेता।



एनईसैक स्थापना दिवस, 2023- फोटोग्राफी प्रतियोगिता में श्री आकाश ज्योति दत्ता, जे.आर.एफ, द्वितीय पुरस्कार विजेता।

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सचिव, एमडोनर के साथ बैठक

पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकासात्मक क्षमताओं और शासन में सुधार हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग पर चर्चा करने के लिए डॉ. एस पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने सचिव, एमडोनर की अध्यक्षता में 9 नवंबर, 2023 को एमडोनर में एक बैठक में भाग लिया। निदेशक, एनईसैक ने एमडोनर द्वारा विचारार्थ तीन नए प्रस्तावों के साथ-साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र

के विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के सहयोग पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी है। निदेशक, एनईसैक के साथ डॉ. बी आर निकम, डीडी, ईडीपी, इसरो मुख्यालय, डॉ. बी के हैंडिक, प्रमुख, एएसडी एवं पीपीईजी और डॉ. डी चुटिया, प्रमुख, जीआईडी भी थे।



"हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।"

विलियम कैरी

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से जवाबदेही में बढ़ोतरी पर अर्ध दिवसीय संगोष्ठी

ऑडिट दिवस के भाग स्वरूप 24 नवंबर, 2023 को एनईसैक के सहयोग से प्रधान महालेखाकार कार्यालय, शिलांग द्वारा "भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से जवाबदेही बढ़ाना" पर अर्ध दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। संगोष्ठी की शुरुआत शेफाली एस अंदलीब प्रधान महालेखाकार (ऑडिट) की शुरुआती टिप्पणियों से हुई। श्री सीएच खरसिंग, प्रधान महालेखाकार (एएंडई) ने कार्यपालिका की जवाबदेही सुनिश्चित करने में सी एंड एजी की भूमिका

पर बात की। डॉ. एस.पी. अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी समर्थन की भूमिका पर व्याख्यान दिया। डॉ. दिव्यज्योति चुटिया, प्रमुख, जीआईडी ने एनईआर में शासन गतिविधियों को सशक्त बनाने के लिए आईसीटी सक्षम भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर एक प्रस्तुति दी, जबकि श्री निलय निशांत, वैज्ञानिक एसई, जीआईडी ने एनईसैक द्वारा विकसित विभिन्न शासन अनुप्रयोगों पर लाइव प्रदर्शन दिया।



"भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।"

श्री अमित शाह (गृह मंत्री)

'एनईसी जियोटैगिंग / जियो-मॉनिटरिंग परियोजना' के लिए ई-नॉर्थईस्ट अवार्ड 2023

8वां ई-नॉर्थईस्ट अवार्ड 2023 (विजेता), एनईसैक को सरकार और नागरिक जुड़ाव की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ डिजिटल नवाचार के लिए 'भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और उपकरणों का उपयोग करके पूर्वोत्तर क्षेत्र में एनईसी/एमडोनर वित्त पोषित परियोजनाओं/योजनाओं की जियोटैगिंग और निगरानी' के लिए प्रदान किया गया। यह परियोजना एनईसैक द्वारा एनईआर के सभी राज्य सुदूर संवेदन अनुप्रयोग केंद्रों के

सहयोग से संचालित की गई थी। यह पुरस्कार 25 नवंबर, 2023 को रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी, असम में आयोजित 8वें ई-नॉर्थईस्ट अवार्ड 2023 के दौरान प्रदान किया गया। श्री पी.एस सिंह, वैज्ञानिक-एसएफ, और श्री विक्टर साईखोम, वैज्ञानिक-एसएफ, ने 24 नवंबर, 2023 को पुरस्कार जूरी समिति के सामने एक व्यापक तकनीकी प्रस्तुति प्रस्तुत की।



"भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।"

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मेकांग-गंगा सहयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के प्रतिनिधियों ने एनईसैक का दौरा किया

30 नवंबर 2023 को नेरिवालम के माध्यम से जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित उनके प्रशिक्षण के एक भाग स्वरूप में पूर्वोत्तर क्षेत्रीय जल तथा भूमि प्रबंधन संस्थान (नेरिवालम), तेजपुर के अधिकारियों के साथ दक्षिण पूर्व एशिया के पांच देशों के 19 प्रतिनिधियों ने एनईसैक का दौरा किया। एनईसैक बाह्य-जनसंपर्क (आउरीच) सुविधा में जल संसाधन प्रभाग (डब्ल्यूआरडी), एनईसैक द्वारा प्रतिनिधियों के लिए एक व्याख्यान सत्र आयोजित किया गया था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. दिगंत बर्मन, विभागाध्यक्ष, डब्ल्यूआरडी ने की और संचालन श्री रंजीत दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डब्ल्यूआरडी ने किया।

एनईसैक के विभिन्न प्रभागों के वैज्ञानिकों द्वारा जल संसाधन प्रबंधन में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी, भू-स्थानिक आदानों का उपयोग करके हाइड्रोलॉजिकल/हाइड्रोलिक मॉडलिंग, कृषि विकास के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग और सरकारी अनुप्रयोग आदि के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर चार व्याख्यान दिए गए। विभिन्न राज्यों और केंद्र सरकार के विभागों के लिए एनईसैक द्वारा विकसित विभिन्न मोबाइल अनुप्रयोगों और सेवाओं पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति भी दी गई थी। यह दौरा निदेशक, एनईसैक की अध्यक्षता में समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ।



एनईसैक ने भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों और अनुप्रयोगों पर एक सप्ताह का क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया

एनईसैक ने 21-25 नवंबर, 2023 के दौरान भूस्थानिक प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग (जीएसटीए) पर एक सप्ताह का क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका आयोजन इसरो और क्षमता निर्माण आयोग (सीबीसी) द्वारा संयुक्त रूप से दो स्थानों पर किया गया, अर्थात् क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (आरआरएससी) उत्तर, नई दिल्ली और उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एनईसैक), उमियम। कार्यक्रम का उद्घाटन आभासी (वर्चुअल) माध्यम से माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग, डॉ. जितेंद्र सिंह ने सचिव अं.वि., अध्यक्ष इसरो श्री एस सोमनाथ और श्री आदिल जैनुलभाई, अध्यक्ष क्षमता निर्माण आयोग की उपस्थिति में किया गया और पूरे भारत से 13 विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाले 21 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम को व्याख्यान और व्यावहारिक अभ्यास के साथ जोड़ा गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अधिकारी न केवल सैद्धांतिक अवधारणाओं को समझें बल्कि व्यावहारिक विशेषज्ञता भी हासिल करें

जिसे सीधे उनके काम पर लागू किया जा सके। इस पाठ्यक्रम सामग्री को उनकी गतिविधियों के संबंधित क्षेत्रों में विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने में उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। श्री हरीश चंद्र चौधरी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मेघालय सरकार ने प्रतिभागियों को भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के उपयोग पर एक विशेषज्ञ वार्ता और सफलता की कहानियों को साझा किया।

25 नवंबर 2023 को, समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जहां प्रो. डी.पी.गोयल, निदेशक, भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), शिलांग मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे। समापन सत्र के दौरान, डॉ. जोनाली गोस्वामी, कार्यक्रम समन्वयक, ओ एंड सीबी, एनईसैक द्वारा सारांश रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसके बाद प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया ली गई और प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम एनईसैक में जीएसटीए की आयोजन समिति की ओर से डॉ. फ्रांसिस दत्ता, वैज्ञानिक, एनईसैक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।





मेघालय भू-स्थानिक स्वास्थ्य संसाधन सूचना प्रणाली का शुभारंभ

मेघालय में स्वास्थ्य सेवा विभाग (DoHS) ने आधिकारिक तौर पर 20 दिसंबर 2023 को स्वास्थ्य केंद्रों के लिए जियो वेब पोर्टल लॉन्च किया। डॉ. एचसी लिंडेम, डीएचएस (एमआई) ने डीएचएस मुख्यालय में पोर्टल का उद्घाटन किया, जिसमें दूरदराज के क्षेत्रों में अतिसंवेदनशील आबादी की पहचान के लिए पहुंच और अंतर विश्लेषण में इसकी भूमिका पर जोर दिया गया। यह एप्लिकेशन उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक) द्वारा डीएचएस (एमआई), स्वास्थ्य जियो वेब पोर्टल के सहयोग से विकसित किया गया था और राज्य में सभी स्वास्थ्य संसाधनों को जियो-टैग करने के लिए उपग्रह इमेजरी और एक मोबाइल एप्लिकेशन को नियोजित करता है। यह पहल सड़क कनेक्टिविटी, जनसंख्या घनत्व और स्थलाकृति जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए मौजूदा स्वास्थ्य सुविधाओं का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है।

लॉन्च के दौरान, एनईसैक के वरिष्ठ वैज्ञानिक पीएस सिंह ने अंतरिक्ष-आधारित समाधानों की आवश्यकता को

रेखांकित करते हुए एक विस्तृत तकनीकी प्रस्तुति प्रदान की। डॉ. दिव्यज्योति चुटिया, प्रमुख, भू-सूचना विज्ञान प्रभाग एनईसैक ने परियोजना की देखरेख करते हुए उत्तर पूर्वी क्षेत्र में विभिन्न विभागों में लागू शासन समाधानों पर प्रकाश डाला। उमियम में डीएचएस कर्मचारियों और एनईसैक के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा भाग लेने वाले इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्वास्थ्य संसाधनों की नियुक्ति को अनुकूलित करना और अधिकतम राज्यव्यापी कवरेज के लिए नए बुनियादी ढांचे की योजना बनाना है।

मौजूदा स्वास्थ्य सुविधाओं का व्यापक मानचित्रण प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मेघालय भू-स्थानिक स्वास्थ्य संसाधन सूचना प्रणाली इन अंतर्दृष्टि को एकीकृत भू-स्वास्थ्य सूचना प्रणाली, मानचित्र आसूचना, अनुप्रयोग, स्वास्थ्य डेटा और समग्र निर्णय लेने के लिए लोगों को जोड़कर एकीकृत करती है।



माननीय केंद्रीय गृह मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित एनईसैक सोसाइटी की 11वीं बैठक

एनईसैक सोसाइटी की 11वीं बैठक 19 जनवरी, 2024 को मेघालय राज्य कन्वेंशन सेंटर, शिलॉंग में श्री अमित शाह जी, माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री और एनईसैक सोसाइटी के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। बैठक में एनईसैक सोसाइटी के सभी प्रतिष्ठित सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में डोनर के माननीय केंद्रीय मंत्री श्री जी किशन रेड्डी और पूर्वोत्तर राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी भाग लिया। बैठक में केंद्रीय गृह, सड़क, रेलवे और डोनर मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल हुए।

श्री एस सोमनाथ, सचिव, अंतरिक्ष विभाग और उपाध्यक्ष, एनईसैक सोसाइटी ने एनईसैक सोसाइटी की 11वीं बैठक में सभी प्रतिष्ठित सदस्यों और विशेष आमंत्रित लोगों का स्वागत किया। डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक और सोसाइटी के सचिव ने सोसाइटी की 10वीं बैठक के बाद से शुरू की गई परियोजनाओं और गतिविधियों की उपलब्धियां और स्थिति की कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उन्होंने सोसाइटी की अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट और खातों का लेखापरीक्षित विवरण भी प्रस्तुत किया।

अपने संबोधन में, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री और अध्यक्ष, एनईसैक सोसाइटी ने चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 मिशन की सफलता के लिए इसरो को बधाई दी। उन्होंने क्षेत्र की चुनौतियों से निपटने के लिए एनईसैक द्वारा की गई गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एनईसैक ने उपग्रह आधारित स्थलाकृतिक मानचित्रों का उपयोग करके रेल या सड़क के लिए बेहतर परिवहन नेटवर्क प्रदान करने में सहायता की है। उन्होंने इस बात पर जोर देकर कहा कि एनईसैक को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अंतिम मील में नागरिक को सुशासन प्रदान करने और बेहतर प्रशासनिक सहायता प्रदान करने के लिए काम करना चाहिए।

पूर्वोत्तर राज्यों के माननीय मुख्यमंत्रियों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों और संबंधित राज्यों के लिए अतिरिक्त

एनईसैक सोसाइटी की 11वीं बैठक 19 जनवरी, 2024 को मेघालय राज्य कन्वेंशन सेंटर, शिलॉंग में श्री अमित शाह जी, माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री और एनईसैक सोसाइटी के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। बैठक में एनईसैक सोसाइटी के सभी प्रतिष्ठित सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में डोनर के माननीय केंद्रीय मंत्री श्री जी किशन रेड्डी और पूर्वोत्तर राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी भाग लिया। बैठक में केंद्रीय गृह, सड़क, रेलवे और डोनर मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल हुए।

श्री एस सोमनाथ, सचिव, अंतरिक्ष विभाग और उपाध्यक्ष, एनईसैक सोसाइटी ने एनईसैक सोसाइटी की 11वीं बैठक में सभी प्रतिष्ठित सदस्यों और विशेष आमंत्रित लोगों का स्वागत किया। डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक और सोसाइटी के सचिव ने सोसाइटी की 10वीं बैठक के बाद से शुरू की गई परियोजनाओं और गतिविधियों की उपलब्धियां और स्थिति की कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने सोसाइटी की अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट और खातों का लेखापरीक्षित विवरण भी प्रस्तुत किया।

अपने संबोधन में, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री और अध्यक्ष, एनईसैक सोसाइटी ने चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 मिशन की सफलता के लिए इसरो को बधाई दी। उन्होंने क्षेत्र की चुनौतियों से निपटने के लिए एनईसैक द्वारा की गई गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एनईसैक ने उपग्रह आधारित स्थलाकृतिक मानचित्रों का उपयोग करके रेल या सड़क के लिए बेहतर परिवहन नेटवर्क प्रदान करने में सहायता की है। उन्होंने इस बात पर जोर देकर कहा कि एनईसैक को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अंतिम मील में नागरिक को सुशासन प्रदान करने और बेहतर प्रशासनिक सहायता प्रदान करने के लिए काम करना चाहिए।

पूर्वोत्तर राज्यों के माननीय मुख्यमंत्रियों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों और संबंधित राज्यों के लिए अतिरिक्त आवश्यकताओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न उपयोगकर्ता विभागों द्वारा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग पर कार्य योजना के हिस्से के रूप में शुरू की गई परियोजनाओं की स्थिति के बारे में भी बात की।





असम सरकार के सिंचाई विभाग द्वारा सतत कृषि विकास के लिए सिंचाई क्षेत्र में नवोन्मेषी पद्धतियों पर कार्यशाला का आयोजन

डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने असम सरकार के सिंचाई विभाग द्वारा सतत कृषि विकास के लिए सिंचाई क्षेत्र में नवाचार प्रथाओं पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला में श्री एस अब्बासी, अपर आयुक्त एवं सचिव, सिंचाई विभाग, असम सरकार; श्री वी.के. मित्तल, आयुक्त एवं सचिव, सिंचाई विभाग, असम सरकार;

श्री पी आर खाउंड, सचिव, सिंचाई विभाग, असम सरकार; डॉ. नयन शर्मा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, आईआईटी, रुड़की; प्रोफेसर ए के शर्मा, आईआईटी, गुवाहाटी; और सिंचाई विभाग, असम सरकार के कई गणमान्य व्यक्ति और वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।



"देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।"

पं. रविशंकर शुक्ल

"मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।"

आचार्य विनोबा भावे

एनईसैक ने राष्ट्र का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया

राष्ट्र का 75वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2024 को एनईसैक में रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया गया। प्रातः 09:00 बजे एनईसैक के कर्मचारियों ने राष्ट्रगान गाया और इसी के साथ डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने तिरंगा फहराया। एनईसैक की सीआईएसएफ इकाई ने निदेशक, एनईसैक को गार्ड ऑफ ऑनर दिया और गणतंत्र दिवस परेड की। निदेशक, एनईसैक ने एक सूचनात्मक भाषण के साथ केंद्र के कर्मचारियों को संबोधित किया, जहां उन्होंने गणतंत्र दिवस समारोह के महत्व पर प्रकाश डाला और हाल के दिनों में इसरो और एनईसैक की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। इसके बाद, एनईसैक की सीआईएसएफ यूनिट द्वारा एक मॉक ड्रिल अभ्यास का प्रदर्शन किया गया, जहां उन्होंने एक तेज वाहन के साथ आतंकवादी घुसपैठ परिदृश्य को संभालने का प्रदर्शन किया। इसके बाद कर्मचारियों को मिठाइयां का वितरण किया गया और एनईसैक खेल एवं मनोरंजन समिति द्वारा एनईसैक सभागार में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। एनईसैक कर्मचारियों के साथ-साथ एनईसैक सीआईएसएफ यूनिट के कर्मचारी और उनके परिवारों और बच्चों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को भू-स्थानिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और राष्ट्र के विकास के लिए इसके अनुप्रयोगों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान की प्रशंसा और मान्यता के लिए उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को भू-स्थानिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. एस.पी. अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने 15 मार्च, 2024 को कोलकाता में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण में आयोजित GEOSPATIA-2024 कार्यक्रम के दौरान यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किया। डॉ. अग्रवाल, सम्मानित अतिथि के रूप में कार्य करते हुए, GEOSPATIA-2024 के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने

राष्ट्रीय भू-स्थानिक और अंतरिक्ष नीति पर ध्यान केंद्रित करते हुए पैनल-III सत्र पर मुख्य भाषण दिया: भारत की विकास अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का एक रोडमैप और सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. एसपी अग्रवाल को भू-स्थानिक विज्ञान और शासन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान की प्रशंसा और मान्यता में प्रतिष्ठित प्रोफेसर एचआर बेटल मेमोरियल अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।



"हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है।"

राहुल सांकृत्यायन

अमेरिकी महावाणिज्य दूतावास, भारत (कोलकाता) का दौरा

सुश्री पावेक मेलिंडा मेरी, महावाणिज्य दूत, अमेरिकी वाणिज्य दूतावास ने 7 मार्च, 2024 को एनईसैक का दौरा किया। डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने उनका स्वागत किया और एनईसैक की हालिया गतिविधियों और उपलब्धियों पर एक प्रस्तुति दी। डॉ. अग्रवाल ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और निगरानी, बुनियादी ढांचे की योजना, आपदा प्रबंधन सहायता, अंतरिक्ष और वायुमंडलीय विज्ञान

और उपग्रह संचार से संबंधित कुछ प्रमुख भू-स्थानिक और ई-गवर्नेंस अनुप्रयोगों और परिचालन सेवाओं पर प्रकाश डाला। सुश्री पावेक मेलिंडा ने क्षेत्र में सामाजिक लाभ के लिए एनईसैक द्वारा किए जा रहे कार्यों की विविधता और गुणवत्ता की सराहना की। उन्होंने भविष्य में एनईसैक के साथ सहयोग का भी उल्लेख किया है।



क्षेत्रीय सहयोग में उत्कृष्टता के लिए एनईएसडीआर को एजीआई पुरस्कार 2024 प्रदान किया गया

पूर्वोत्तर स्थानिक डेटा रिपोर्टिगरी (NeSDR) ने क्षेत्रीय सहयोग में उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित AGI इंडिया अवार्ड 2024 जीता। एनईएसडीआर डेटा अन्वेषण, विश्लेषण और साझाकरण के लिए एकल विंडो एकीकृत मंच की सुविधा के लिए एनईसैक द्वारा विकसित अद्वितीय और प्रमुख अनुप्रयोगों में से एक है। यह परियोजना पूर्वोत्तर परिषद/डोनर मंत्रालय (एमडीओएनईआर) द्वारा प्रायोजित थी और पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य सुदूर संवेदन अनुप्रयोग केंद्र (एसआरएसएसी) के सहयोग से निष्पादित की गई थी।

20 फरवरी, 2024 को आयोजित भारत भू-स्थानिक नेतृत्व शिखर सम्मेलन - IGLS 2024 में, डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने के अतिरिक्त, डॉ. एस.पी अग्रवाल ने मूल्यवान अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण पेश करते हुए "राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सहायक भू-स्थानिक अनुप्रयोग" पर तकनीकी सत्र के दौरान पैनलिस्ट के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया।



"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"

कमलापति त्रिपाठी

केंद्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव एवं सीईओ ने एनईसैक का दौरा किया

श्री पी शिवकुमार, आईएफएस, सदस्य सचिव और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), केंद्रीय रेशम बोर्ड (सीएसबी), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, बेंगलुरु ने 08 फरवरी, 2024 को एनईसैक का दौरा किया।

उनके साथ डॉ. कार्तिक नियोग, निदेशक, मुगा इरी रेशमकीट बीज संगठन (मेसो), सीएसबी, गुवाहाटी, श्री नागेश, एस., सहायक सचिव (तकनीकी), आरओ, सीएसबी मुख्यालय और श्री आर वानखर, रेशम उत्पादन के उप निदेशक, मेघालय सरकार थे।

डॉ. एस.पी अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने जीएसएलवी ब्रश मॉडल और खासी पारंपरिक स्टोल देकर सदस्य सचिव का स्वागत किया। डॉ. बी.के. हैंडिक, प्रमुख, कृषि एवं मृदा प्रभाग (एएसडी) ने सीएसबी द्वारा एनईसैक को वित्त पोषित परियोजनाओं पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी। श्री पी एस सिंह, वैज्ञानिक 'एसएफ', भू-सूचना विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग (जीआईडी) ने सीएसबी की वित्तीय सहायता से

एनईसैक द्वारा विकसित सिल्क्स (रेशम उत्पादन सूचना लिंकेज और ज्ञान प्रणाली) जियो-पोर्टल का प्रदर्शन किया। डॉ. जोनाली गोस्वामी, वैज्ञानिक 'एसएफ', डॉ. चंदन गोस्वामी, वैज्ञानिक 'एसएफ' और डॉ. फ्रांसिस दत्ता, वैज्ञानिक 'एससी' ने भी सदस्य सचिव के साथ बातचीत की।

अपनी समापन टिप्पणी में, श्री पी शिवकुमार ने सीएसबी के प्रमुख कार्यक्रमों को एनईसैक द्वारा प्रदान किए गए सहयोग पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की है। उन्होंने एनईसैक से सीएसबी के सिल्क समग्र-2 कार्यक्रम के कार्यान्वयन के मूल्यांकन में सहायता जारी रखने का अनुरोध किया। उन्होंने एनईसैक से एनईसैक में सीएसबी के नए भर्ती किए गए वैज्ञानिकों के लिए दो सप्ताह का अनुकूलित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का भी अनुरोध किया है।



"भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।"

श्री नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

एनईसैक ने स्वच्छता पखवाड़ा 2024 का अनुपालन किया

एनईसैक में दिनांक 01.02.2024 से 15.02.2024 तक स्वच्छता पखवाड़ा 2024 मनाया गया। पखवाड़े के पहले दिन निदेशक एनईसैक ने पखवाड़े का उद्घाटन किया। पखवाड़े की शुरुआत- प्रतिज्ञा, हस्ताक्षर अभियान और सामूहिक सफाई अभियान जैसी गतिविधियों से हुई। विभिन्न समन्वयकों की पहचान की गई जो दैनिक आधार पर

गतिविधियों का नेतृत्व किया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न स्वच्छता गतिविधियों का अनुपालन किया गया, जैसे प्लांटिंग रन, आस-पास के गाँवों की सफाई आदि। स्कूली बच्चों और आसपास के ग्रामीणों को शामिल करते हुए स्वच्छता के बारे में जागरूकता अभियान भी चलाया गया। इस वर्ष झीलों, नदियों, वर्षा जल संचयन, तालाबों आदि जैसे जल निकायों की सफाई भी शामिल थी। स्टाफ और स्कूली बच्चों के बीच पेंटिंग, क्विज, भाषण, स्वच्छता बैनर पर सेल्फी जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दैनिक गतिविधियों में प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए, कर्मचारियों को धातु की पानी की बोतलें और जूट के बैग वितरित किए गए। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर एक वार्ता आयोजित की गई, जिसे रेडियो मिर्ची, शिलांग से प्रसिद्ध आरजे निकी ने दिया। पीसीबी मानदंडों के अनुसार उपयोग के लिए इसकी उपयुक्तता की जांच करने के लिए पीने के पानी के नमूनों और एसटीपी अपशिष्टों का भी परीक्षण किया गया।



"हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।"

पंडित मदन मोहन मालवीय (भारत रत्न)

विविध हिंदी कार्यशालाओं (2023) की कुछ झलकियां

31 मार्च 2023, को 'कंप्यूटर में यूनिकोड हिंदी टाइपिंग' पर श्री कुलप्रसाद उपाध्याय, राजभाषा अधिकारी, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम ने ऑनलाइन कार्यशाला का संचालन किया।



श्री राजेश चुर्वेदी, उपनिदेशक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, गुवाहाटी ने 'कंप्यूटर में राजभाषा का प्रयोग' भाग -II (21.09.2023) विषय पर कार्यशाला का संचालन किया।



श्री राजेश चुर्वेदी, उपनिदेशक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, गुवाहाटी ने 'कंप्यूटर में राजभाषा का प्रयोग' भाग -I (23.06.2023) विषय पर कार्यशाला का संचालन किया।

विश्व हिंदी दिवस (10.01.23 से 16.01.23) की झलकियां



विश्व हिंदी दिवस समारोह (10.01.2023 से 16.01.2023) का उद्घाटन



विश्व हिंदी दिवस समापन समारोह (16.01.2023) के दौरान पुरस्कार वितरण

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"

कमलापति त्रिपाठी

एनईसैक - हिंदी पखवाड़ा (14.09.23 - 29.09.23)



डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान दीप प्रज्वलन



डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक द्वारा हिंदी दिवस शपथ समारोह



डॉ. एस.पी.अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में अधिकारियों /कर्मचारियों और परिवार सदस्यों को पुरस्कार वितरण

पूर्व - पूर्वोत्तर क्षेत्र का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन - 2022



08 दिसम्बर, 2022 को सीएसआईआर-खनीज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, आचार्य विहार, भुवनेश्वर, उड़ीसा-75103 में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह में भाग लिया।

उक्त कार्यक्रम में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा तथा श्री भर्तृहरी महाताब, उपाध्यक्ष, राजभाषा संसदीय समिति अध्यक्ष और मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र(एनईसैक), उमियम को वर्ष 2020-2021 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार स्वरूप शिल्ड की प्राप्ति हुई, जिसे निदेशक, एनईसैक की ओर से डॉ. विजय कृष्ण

हैंडिक, कार्यक्रम नियोजन एवं मूल्यांकन समूह(पी.पी.ई.जी) ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर-कमलों से ग्रहण किया और संगठन को प्रथम स्थान प्राप्त कराने में श्रीमती नमिता रानी पाल मित्रा, क.अनुवाद अधिकारी, एनईसैक के सहयोग हेतु श्री भर्तृहरी महाताब, उपाध्यक्ष, राजभाषा संसदीय समिति द्वारा उन्हें प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।



नराकास पुरस्कार वर्ष 2021-2022



21 फरवरी 2023 को नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति), शिलांग में आयोजित दूसरी नराकास बैठक के दौरान, एनईसैक को वर्ष के लिए नराकास, शिलांग शील्ड योजना-2021-2022 के तहत राजभाषा कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

महावीर प्रसाद द्विवेदी

एनईसैक परिवार के नये सदस्य



श्री हेमंत कुमार शर्मा रंगिया शहर,, असम के मूल निवासी हे। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने 2012 में गौहाटी कॉमर्स कॉलेज से वाणिज्य में स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद, उन्होंने 2014 में गौहाटी विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। 17 जून, 2016 को श्री हेमंत ने इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स, महेन्द्रगिरि में शामिल हुये लेखा अनुभाग में एक सहायक के रूप में शामिल हुए। वे 29 सितंबर, 2023 को उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, उमियम में वरिष्ठ सहायक के पद पर नियुक्त हुए। फिलहाल वे निदेशक कार्यालय में वरिष्ठ सहायक का पदभार समहाल रहे है।



श्री शारिक आलम 01.09.2010 को अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (सैक), अहमदाबाद में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में इसरो में शामिल हुए। इसके बाद एस.डी.एस. सी. श्रीहरिकोटा, इसरो मुख्यालय और डी.ओ.एस. सचिवालय में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/अवर सचिव और सेमी कंडक्टर प्रयोगशाला में प्रमुख, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन के रूप में कार्य किया। 06.11.2023 को वे प्रशासन नियंत्रक के रूप में एनईसैक में शामिल हुए।



एनईसैक में हार्दिक स्वागत है।



संपादक

श्री अंजन देबनाथ, वैज्ञा./अभि., 'एसई'

संपादक मंडली

डॉ. बिजय कृष्ण हेंडिक, प्रमुख, पीपीईजी/एएसडी

श्री शारिक आलम, प्रशासन नियंत्रक

श्री कुमार आनंद, प्रशासनिक अधिकारी

श्री सिद्धार्थ भूंया, वैज्ञा./अभि., 'एसडी'

डॉ. अभय श्रीवास्तव, वैज्ञा./अभि. 'एससी'

श्रीमती नमिता रानी पाल मित्रा, कनि.अनुवाद अधिकारी



उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

उमियम, मेघालय